11.7.74

मुरली में दी गई डायरेक्शन्स से ही सर्व-कमियों से छुटकारा

दृष्टि और वृत्ति को सतोप्रधान बनाने वाले, कर्म-बन्धनों से मुक्ति दिलाने वाले, सर्वशक्तियों की चाबी प्रदान करने वाले अति मीठे शिव बाबा ने पूछा:–

''अपने को महादानी, सर्वशक्तियों के अधिकारी, त्रिमूर्ति बाप द्वारा प्राप्त हुए तीनों तख्तनशीन समझते हो? तीन तख्त कौन-से हैं? एक है–बेगमपुर के बादशाह बनने का साक्षी स्थिति में स्थित होने वाला, साक्षीपन का तख्त। दूसरा है-पॉवरफुल मास्टर सर्वशक्तिवान् बाप समान सबूत बनाने वालों का, बाप का दिल रुपी तख्त। तीसरा है-भविष्य विश्व महाराजन् का तख्त। क्या इन तीनों तख्तों के अधिकारी बने हो? तीनों तख्तों के अधिकारी की वर्तमान स्टेज कौन-सी है? तीनों तख्तों की तीन विशेषताएं सुनाओ।

साक्षीपन के तख्त की मुख्य निशानी कौन-सी होगी? वह सदैव हर कदम, हर संकल्प में बाप-दादा को सदा साथी अनुभव करेंगे; जितना साथीपन का अनुभव होगा, उतना ही अचल, अडोल और अतीन्द्रिय सुख में रहेंगे। उनका हर बोल बाप के साथ दिखाई देगा। जैसे बाप-दादा प्रैक्टिकल में सदा के साथी ऐसे हैं जिसे आप अलग करना चाहो तो भी नहीं कर सकते। जैसे दोनों साथियों के साथ का कभी-कभी ऐसा भी अनुभव करते हो कि दो हैं वा एक हैं। ऐसे ही दो का साथ एक समान हो। एक ही नहीं, लेकिन एक समान। समान को लोगों ने समाना कह दिया है, तो ऐसे अपने को क्या बाप-दादा के साथी अनुभव करते हो? फॉलोफादर (follow father) करते हो? जब फॉलोफादर है तो साक्षीपन और साथीपन का अनुभव, हर सेकेण्ड व हर कदम में होना चाहिए। ऐसे साक्षीपन के अनुभवी ही तख्तनशीन होते हैं, दूसरा बाप के दिल-तख्तनशीन वह होगा, जो सपूत होगा अर्थात् बाप-दादा को मनसा, वाचा, कर्मणा व तन-मन-धन सब बातों में फॉलो करने का सबूत देगा। तीसरा है विश्व-महाराजन् बन विश्व के राज्य के तख्तनशीन बनने का। वह न सिर्फ कर्मइन्द्रिय-जीत लेकिन वह साथ-साथ प्रकृतिजीत भी होगा। ऐसा विकर्माजीत, कर्मेन्द्रिय-जीत, प्रकृतिजीत, जगतजीत बनता है। क्या ऐसे तीनों तख्तनशीन बने हो? अगर तीनों तख्त के अधिकारी बन गये तो ऐसे अधिकारी बाप के पास किसी भी प्रकार की क्यू में नहीं होंगे। जो कोई भी क्यू में हैं–तो उन्हें किसी भी प्रकार के अधिकार की प्राप्ति नहीं।

आज बाप-दादा हरेक क्यू वाले को रेसपान्स (responce) दे रहे हैं। भिन्न-भिन्न प्रकार की अर्जी डालते हो कि यह कर दो, वह कर दो। ऐसी अर्जी डालते हो, तो यह याद नहीं आता कि बाप-दादा बच्चों को स्वयं से भी ज्यादा हर कार्य में आगे रखता है जब सर्वशक्तियाँ अर्थात् पॉवर्स (powers) बच्चों को दे दीं हैं, तो ऐसे बालक सो मालिक अर्जी क्या डालते हैं? जैसे बाप कोई की भी बुद्धि का ताला खोल सकता है व संस्कार को बदल सकता है, तो क्या आप लोग नहीं कर सकते हो? आप लोगों की बुद्धि का ताला खुला है? इसमें तो ना नहीं कहेंगे ना? बाप-दादा ने हरेक को बुद्धि का ताला खोलकर अनुभवी बनाया है ना? जैसे आप लोगों का बाप ने खोला, अनुभव कराया तो अनुभव की हुई बात क्या स्वयं नहीं कर सकते हो? जैसे आप लोगों का खुला, वैसे ही दूसरों का खोलो। दूसरों का ताला खोलना मुश्किल है क्या? ताले की चाबी कौन-सी है? वह चाबी बाप ने आपको नहीं दी है क्या? जब से बाप के बच्चे बने हो तो जो बाप का सो आपका नही है क्या? चाबी भी आपकी है ना? चाबी है, फिर भी बाप को कहते हो कि ताला खोलो! या समय पर चाबी मिलती नहीं है? बाप तो अपने पास सिर्फ दिव्य दृष्टि की चाबी रखते हैं। बाकी बुद्धि का ताला खोलने की चाबी अपने पास नहीं रखते। बुद्धि का ताला खोलने की चाबी कौन-सी है?–सर्वशक्तियाँ; यही चाबी है। यह तो सबके पास है ना? दिव्य दृष्टि के दाता तो नहीं हो लेकिन मास्टर सर्वशक्तिवान् तो हो ना? जब सर्वशक्तियों की चाबी बाप द्वारा प्राप्त हो चुकी है, फिर भी अर्जी क्यों डालते हो? बाप को सर्वेन्ट बनाया है इसलिए ऑर्डर देते हो कि यह करो और वह करो। वानप्रस्त तक पहुँचने वाले भी अभी तक छोटे हैं। अभी तो समय है अपनी रचना रचने का, प्रजा और भक्त माला बनाने का। रचयिता कहे कि मैं छोटा हूँ तो रचना कैसे रचेंगे? इसलिये यह भिन्न-भिन्न प्रकार की अर्जी बाप को डालते हो। पहले चाबी को प्राप्त करो तो अर्जी स्वत: ही पूरी करेंगे।

दूसरी बात बाप को उलहना देते हो। उलहनों की भी क्यू है ना? किसी प्रकार का उलहना कौन देता है? कोई भी बात का उलहना तब दिया जाता है, जब नॉलेजफुल नहीं हैं। यह क्यों हुआ? ऐसा नहीं होना चाहिए था, पीछे क्यों आये, साकार में क्यों नहीं मिले, यह सब उलहने हैं ना? अगर मास्टर नॉलेजफुल की स्टेज पर स्थित हो जाओ, त्रिकालदर्शी की स्थिति में स्थित हो जाओ तो कोई उलहना देंगे? क्या उलहनों से साकार तन के मिलने की प्राप्ति हो सकेगी? जब बीत चुका हुआ पार्ट फिर से रिपीट होगा क्या? वह तो फिर ५००० वर्ष बाद रिपीट होगा। तो नॉलेजफुल की स्टेज पर स्थित होने वाला कभी भी किसी प्रकार का उलहना नहीं देगा। उलहना अर्थात् नॉलेज की कमी और लाइट-माइट की कमी।

तीसरी बात कम्पलेन्ट्स (complaints) करते हो वह भी लम्बी क्यू है ना? भिन्न-भिन्न प्रकार की कम्पलेन्ट्स करते रहते हो–योग

नहीं लगता, व्यर्थ संकल्प बहुत आते हैं या फलानी शक्ति धारण नहीं कर सकते। इन कम्पलेन्ट्स का कारण क्या है-व्यर्थ संकल्प। मुख्य कम्पलेन्ट मेजॉरिटी (majority) की यह दिखाई देती है, दूसरी मुख्य कम्पलेन्ट है–वृत्ति और दृष्टि चंचल होती है। यह दोनों कम्पलेन्ट्स तब तक हैं, जब तक रोज की मुरली द्वारा जो डायरेक्शन्स मिलती रहती है उन डायरेक्शन्स को अर्थात् मुरली को ध्यान से सुनकर और धारण नहीं करते हैं। व्यर्थ संकल्प चलने का मूल कारण यह है जो ज्ञान का खजाना हर रोज बाप द्वारा मिलता है उस खजाने की कमी है। अगर सारा समय ज्ञान-रत्नों से खेलने में व ज्ञान खजाने को देखने में, सुमिरण करने में बुद्धि को बिजी रखो, तो क्या व्यर्थ संकल्प आ सकते हैं? पहले अपने आप से पूछो कि क्या मेरी बुद्धि सारा दिन ज्ञान के सुमिरण में व विश्व-कल्याण के प्लेन्स बनाने में बिजी रहती है?

जैसे लौकिक रीति में भी कोई कार्य में बुद्धि बिजी रहती है तो दूसरे संकल्प व दूसरी बातें नहीं आती हैं, क्योंकि बुद्धि बिजी है। आप लोगों को भी जिम्मेवारी व बाप द्वारा जो कार्य मिला है वह कितना बड़ा है और अब तक भी कार्य कितना रहा हुआ है? अभी विश्व की टोटल आत्माओं के हिसाब से पाँच पाण्डव निकले हो। इतना रहा हुआ कार्य और साथ-साथ अपने विकर्मो को भस्म करने का कार्य है। कितने जन्मों के बोझ को भस्म करना है? ६३ जन्मों के पाप-कर्मो के खाते को भस्म करना है। साथ-साथ ज्ञान के खजाने को सुमिरण करते रहो तो क्या समय बच सकता है या कम पडेगा। तीन बातें सुनाई–एक तो ज्ञान खजाने के सुमिरण करने का कार्य, दूसरा विकर्म भस्म करने का कार्य, तीसरा विश्व के कल्याण का कार्य ये तीनों ही विशेष और बेहद के कार्य हैं। इतना बुद्धि का काम होते हुए भी, बुद्धि फ्री कैसे रहती है? फुर्सत कैसे मिलती है आप लोगों को? विश्व के कल्याण का कार्य समाप्त कर लिया है क्या? विकर्म भस्म कर लिए हैं क्या? इतनी कारोबार चलाने वाले व इतने बड़े कार्य के निमित्त बनी हुई आत्मायें फ्री रहें तो उसको क्या कहा जाय? अपने कार्य की नॉलेज नहीं व स्वयं को चलाने की नॉलेज नहीं, या अपनी दिनचर्या को सेट करने की नॉलेज नहीं। आजकल कौरव गवर्नमेण्ट के छोटे-छोटे कलर्क भी टाइम टेबल (time table) सेट कर सकते हैं तो क्या आप मास्टर नॉलेजफुल, मास्टर सर्वशक्तिवान् अपना टाइम टेबल सेट (set) नहीं कर सकते? क्योंकि आप स्वयं को अपनी सीट पर सेट नहीं करते हो इसीलिए अपसेट (upset) होते हो।

अत: रोज अमृत वेले बाबा से मिलन मनाने के बाद व रुह-रुहान करने के बाद रोज का टाइम टेबल सेट करो। जैसे स्थूल काम का प्रोग्राम सेट करते हो वैसे व्यवहार के साथ परमार्थ का प्रोग्राम भी सेट करो। व्यर्थ संकल्प चलना अर्थात् ताजधारी नहीं बने हो। ताज है जिम्मेवारी का। स्वयं की जिम्मेवारी और विश्व की जिम्मेवारी। अगर अब भी बार-बार ताज को उतार देते हो व ताजधारी नहीं बन सकते हो तो भविष्य में ताजधारी कभी बन नहीं सकते। अभी से प्रैक्टिस चाहिए भविष्य ताजधारी और तख्तधारी बनने की। साक्षीपन का तख्त और बापदादा के दिल का तख्त। तो अभी से ताज और तख्तधारी बनेंगे तब भविष्य में भी ताज और तख्त प्राप्त कर सकेंगे। अपना टाइम टेबल सेट करो व स्वयं-ही-स्वयं का शिक्षक बन स्वयं को होम वर्क (Home work) दो। जैसे शिक्षक स्टुडेण्ट (student) को होम वर्क देते हैं ना? इसमें बुद्धि बिजी रहे। इस प्रकार रोज अपने को होम वर्क दो और फिर साक्षी होकर चैक करो कि होम वर्क में बिजी हैं या माया के आकर्षण में होम वर्क भूल गये हैं? तो फिर कम्पलेन्ट समाप्त हो जावेगी।

दूसरी बात है वृत्ति और दृष्टि के चंचल होने की। प्रेजण्ट (present) समय भी मेजॉरिटी (majority) की रिजल्ट में देखें तो 50% अभी भी हैं जिनकी यह कम्पलेन्ट है। संकल्प में, स्वप्न में और कर्म में वृत्ति और दृष्टि चंचल होती है। वृत्ति और दृष्टि चंचल क्यों होती है? कोई भी चीज चंचल क्यों होती है, कारण क्या है? कोई भी चीज हिलती क्यों है? हिलने की मार्जिन (margine) है तब तो हिलती है। अगर वह फुल अर्थात् सम्पन्न हो तो हिलेगी? तो दृष्टि और वृत्ति चंचल होने का कारण यह है। जो बाप ने स्मृति सुनाई उसके बजाय विस्मृति की मार्जिन है तब हिलती है व चंचल होती है। अगर सदा स्मृति स्वरुप हो, स्मृति सम्पन्न हो तो वृत्ति और दृष्टि को चंचल होने की मार्जिन मिल नहीं सकती। इसके लिए बहुत छोटा-सा स्लोगन (slogan) भूल जाते हो। लौकिक में भी कहते हैं–बुरा न देखो, बुरा न सोचो, और बुरा न सुनो। अगर इस स्लोगन को भी सदा स्मृति में रखो व प्रैक्टिकल में लाओ कि देह को देखना अर्थात् बुरा देखना है। देहधारी प्रति सोचना व संकल्प करना, यह बुरा है। देहधारी को देहधारी समझ उससे बोलना यह बुरा है। इसीलिए अगर यह साधारण स्लोगन भी प्रैक्टिकल में लाओ तो दृष्टि और वृत्ति चंचल नहीं होगी।

जिस समय वृत्ति और दृष्टि चंचल होती है तो उस समय स्वयं को यह समझना चाहिए कि क्या मैंने सर्व-सम्बन्धों की सर्व-रसनायें बाप द्वारा प्राप्त नहीं हैं? कोई रस रह गया है क्या कि जिस कारण दृष्टि और वृत्ति चंचल होती है? जिस सम्बन्ध से भी वृत्ति और दृष्टि चंचल होती है उसी सम्बन्ध की रसना यदि बाप से लेने का अनुभव करो तो क्या दूसरी तरफ दृष्टि जावेगी? समझो कोई मेल (male) की, फीमेल (female) की तरफ दृष्टि जाती है या फीमेल की, मेल की तरफ जाती है तो क्या बाप सर्व रुप धारण नहीं कर सकता?

साजन व सजनी के रुप में भी बाप से सजनी बन व साजन बन कर अतीन्द्रिय सुख का जो रस सदा-सदा काल स्मृति में और समर्थी में लाने वाला है, वह अनुभव नहीं कर सकते हो? बाप से सर्व-सम्बन्धों के रस व स्नेह का अनुभव न होने के कारण देहधारी में वृत्ति और दृष्टि चंचल होती है। ऐसे समय में बाप को धर्मराज के रुप में सामने लाना चाहिए और स्वयं को एक रौरव नर्कवासी व विष्ठा का कीड़ा समझना चाहिए। और सामने देखो कि कहाँ मास्टर सर्वशक्तिवान् और कहाँ मैं इस समय क्या बन गया हूँ? रौरव नर्कवासी विष्ठा का कीड़ा ऐसे स्वयं का रुप सामने लाओ और तुलना करो कि कल क्या था और अब क्या हूँ? तख्तनशीन से क्या बन गया हूँ? तख्त-ताज को छोड़ क्या ले रहा हूँ?-गन्दगी। तो उस समय क्या बन गये? गन्दगी को देखने वाला व धारण करने वाला कौन हुआ? गन्दा काम करने वाले को क्या कहते हैं? बिल्कुल जिम्मेवार आत्मा से जमादार बन जाते हो। क्या ऐसे को बाप-दादा टच कर सकता है? स्नेह दृष्टि दे सकता है? अर्जी मान सकता है? कम्पलेन्ट व उलहना सुन सकता है? इतने नॉलेजफुल होने के बाद भी वृत्ति और दृष्टि चंचल हो, तो उसे भक्ति आत्मा से भी गिरी हुई आत्मा कहेंगे। भक्त भी किसी युक्ति से अपनी वृत्ति को स्थिर करते हैं। तो मास्टर नॉलेजफुल भक्त आत्मा से भी नीचे गिर जाते हैं। तो क्या ऐसी आत्मा की कोई प्रजा बनेगी? जमादार की कोई प्रजा बनेगी क्या या वह स्वयं प्रजा बनेंगे?

अपना एक फोटो निकाल रखो। जैसे कोई गन्दगी उठाने वाला हो और टोकरे पर टोकरा गन्द का उठाया हो। ऐसा चित्र निकाल बुद्धि में रखो। जिस समय वृत्ति और दृष्टि चंचल होती है, उस समय वह फोटो देखो। जैसे बाप-दादा ने भविष्य प्रारब्ध की फोटो निकलवाई क्योंकि चिद्ध को देख चरित्र स्मरण आवेगा। ऐसा चित्र जब सामने आवेगा तो क्या शर्म व लज्जा नहीं आवेगी? एक तरफ मास्टर सर्व-शक्तिवान् का चित्र, दूसरी तरफ वह चित्र रखो तो अपने आप ही मालूम पड़ जावेगा कि हम क्या बन गये। मास्टर सर्वशक्तिवान् के आगे अभी तक भी वृत्ति और दृष्टि का चंचल होना शोभता नहीं है।

पहली गलती तो यह है कि शरीर को क्यों देखते हो। तुमको तो मस्तक में आत्मा को देखना है ना? मस्तक में मणि है ना? मस्तक में मणि के बजाय साँप को क्यों देखते हो जिससे विष की प्राप्त हो जाती है? पहली गलती तो यह करते हो कि जो मस्तक के बजाय शरीर को देखते हो। कई कम्पलेन्ट करते हैं कि वातावरण और संग ऐसा है, साथी ऐसे हैं, दफ्तर में, बिजनेस में काम करना पड़ता है, सम्पर्क में आना पड़ता है। सम्पर्क में आते, बातचीत करते मस्तक के सिवाय और कहीं देखते ही क्यों हो। दूसरी बात वातावरण के वशीभूत होने वाले अपने आप से पूछे कि हमने बाप के साथ-साथ किस बात का ठेका उठाया है? ठेकेदार हो ना आप सब लोग? नर्क को बदल कर स्वर्ग बनाना, प्रकृति के तमोगुण को सतोगुण में परिवर्तन करना, यह ठेका उठाया है ना? प्रकृति को बदलने वाले स्वयं ही बदल जाते हैं? ठेका उठाया है पाँच तत्वो को बदलने का, और वशीभूत फिर वातावरण के हो जाते हो! जिस समय वातावरण के वशीभूत हो जाते हो उस समय स्थूल उदाहरण सामने रखो। अगरबत्ती कब वातावरण के वशीभूत नहीं होती है। वातावरण को बदलने के लिये अगरबत्ती है। तो आपकी रचना में अगरबत्ती बनने वाला कौन?–मनुष्य आत्मा। तो आपकी रचना में यह विशेषता है और रच-यिता में नहीं। तो रचयिता हुए या कमजोर हुए। इस कम्पलेन्ट को भी अपनी स्मृति और युक्ति द्वारा समाप्त करो।

मुख्य यह दो कम्पलेन्ट्स हैं। एक-दो पार्टी से मिलते हो तो यह कम्पलेन्ट ही विशेष होती है। इसलिये ड्रामानुसार बार-बार यही बातें करना और बार-बार बाप द्वारा यही शिक्षा मिलना इसका भी हिसाब-किताब बनता है। इसलिए ड्रामानुसार अब तक भी स्पेश्यल सर्विस लेना यह भी पार्ट समाप्त हो रहा है। इसमें भी रहस्य है। वही बात कई बार पूछते हैं–एक वर्ष वायदा करके जाते हैं कि अगले वर्ष यह कम्पलेन्ट नहीं होगी। दूसरे वर्ष फिर दोबारा कहते कि अगले वर्ष नहीं होगी। जो वर्ष बीता वह किस खाते में गया? समझते हैं कि बाप-दादा को वायदा भूल जाता है। समझते हैं बाप-दादा को क्या याद होगा? बाप-दादा को सबके वायदे याद रहते हैं लेकिन बाप-दादा बच्चों का डिस-रिगार्ड (dis-regard) नहीं करते। सामने बैठ कहे कि वायदा नहीं निभाया, यह भी डिस-रिगार्ड है। जब सिर का ताज बना रहे हैं, स्वयं से भी आगे रख रहे हैं, तो ऐसी आत्मा का डिस-रिगार्ड कैसे करेंगे? इसलिए मुस्कराते हैं। ऐसे नहीं कि याद नहीं रहता है। आत्माओं को तो चला देते हैं। निमित्त बनी हुई टीचरों को बड़ी चतुराई से चला देते हैं। कहेंगे आपने हमारे भावार्थ को नहीं समझा। हमारा भाव यह नहीं था, शब्द मुख से निकल गया। लेकिन बाप-दादा भाव के भी भाव को जानता है। उससे छिपा नहीं सकेंगे। टीचर फिर भी समझेंगे मेरे से गल्ती हो गई; हो सकता है। लेकिन बाप से तो नहीं हो सकती है ना? इसलिये अब छोटी-छोटी बातों के लिये समय नहीं। यह भी व्यर्थ में एड (add) हो जाता है। बाप से जितनी मेहनत लेते हो, उतना रिटर्न (Return) करना होगा। व्यक्त रुप में मेहनत ली। अव्यक्त रुप में भी कितने वर्ष हो गये। छठा वर्ष चल रहा है। अव्यक्त रुप में भी छ: वर्ष इन्हीं बातों पर शिक्षा मिलती रही। अब तक भी वही शिक्षा चाहिए? अभी सर्विस लेने का टाइम है अथवा रिटर्न करने का टाइम है? अगर रिटर्न नहीं करेंगे तो प्रजा नहीं बना सकेंगे। इसलिये अब स्वयं को पॉवरफुल बनाओ। नॉलेजफुल बनाओ। अनेक प्रकार की क्यू से स्वयं को मुक्त

करो। युक्ति जो मिलती है उसको काम में नहीं लगाते हो, इसलिये मुक्त नहीं हो पाते। अच्छा यह हुआ क्यू का रेसपॉस। अब बाप-दादा बच्चों से विदाई लेते हैं।'' अच्छा ओम् शान्ति।

इस मुरली का सार

(१)साक्षीपन का तख्त, बाप-दादा का दिल तख्त और विश्व के राज्य भाग्य का तख्त–इन तीनों तख्तों का अधिकारी बाप के पास किसी भी प्रकार की क्यू में नहीं होगा।

(२) बुद्धि का ताला खोलने की चाबी है सर्वशक्तियाँ इनको प्राप्त करने से भिन्न-भिन्न प्रकार की अर्जियाँ बाप-दादा के पास डालनी बन्द हो जायेंगी।

(३) नॉलेजफुल और त्रिकालदर्शी की स्टेज पर स्थित होने वाला कभी भी किसी भी प्रकार का उलहना नहीं देगा।

(४)रोज की मुरली द्वारा जो डायरेक्शन्स मिलती रहती हैं उन डायरेक्शन्स अर्थात् मुरली को ध्यान से सुनकर और उसे धारण करने से व्यर्थ संकल्प और वृत्ति और दृष्टि का चंचल होना–यह दोनों मुख्य कम्पलेन्ट्स समाप्त हो जायेंगी।

14.7.74

बाप के समान सफलता-मूत्र बनने के लिए सर्व के प्रति शुभ भावना

सफलता के सितारे बनाने वाले तथा सम्पूर्ण लक्ष्य की प्राप्ति कराने वाले हर आत्मा के शुभ चिन्तक शिव बाबा ने ये मधुर महावाक्य अपनी धरती के रुहानी सितारों रुपी बच्चों के सम्मुख उच्चारे:–

''आज इस सभा के बीच, बाप-दादा तीन प्रकार के सितारे देख रहे हैं। ज्ञान-सितारे तो आप सभी हो परन्तु ज्ञान सितारों में भी तीन प्रकार कौन-कौन से हैं? एक हैं सफलता के सितारे, दूसरे हैं लक्की सितारे (Lucky stars) और तीसरे हैं उम्मीदों के सितारे। हरेक सितारे की, अपनी-अपनी दुनिया है। क्या आप सभी ने अपनी-अपनी दुनिया देखी है या सिर्फ अपने आप को ही देखा है? दुनिया अर्थात् रचना। क्या आपको, अपनी रचना दिखाई देती है? क्या जानते हो कि रचना में कितनी और क्या-क्या बातें देखी जाती हैं? आप अपनी रचना को तो देखते होंगे ना? जो बाप की रचना, सो आपकी रचना। आप तो मास्टर रचयिता हो ना? आपने बाप की प्रजा पर ही तो राज्य नहीं करना है ना? आप मास्टर रचयिता नहीं बनते हो क्या? सदा रचना ही रहेंगे क्या? रचना अर्थात् अपनी राजधानी तो बना रहे हो ना? राजधानी में भी नम्बरवार तो होते हैं ना? वह भी किस आधार से होते हैं और उनमें भी, आपके ही भक्त हैं। शक्तियों के भक्त और बाप के भक्त अलग-अलग हैं।

आपके भक्त कौन बनेंगे, किस हिसाब से आपके भक्त बनेंगे? जिन आत्माओं को, जिन श्रेष्ठ आत्माआं द्वारा व निमित्त बनी हुई आत्माओं द्वारा कुछ-न-कुछ प्राप्ति का अनुभव होता है, उन द्वारा कोई साक्षात्कार होता है और या कोई वरदान प्राप्ति का अनुभव होता है, तो उस आधार पर, वह उनकी प्रजा और भक्त बनते हैं। जो समीप आत्माएं होती हैं; जिन आत्माओं का, बाप से सम्बन्ध भी जुट जाता है और साथ-साथ बाप द्वारा वर्से के अधिकारी भी बनते हैं, वे रॉयल फेमिली (royal family) में आते हैं। एक ही समय में, हरेक आत्मा, अपनी रॉयल फेमिली बना रही है अर्थात् वह भविष्य सम्बन्ध व राजघराना भी बना रही है; प्रजा भी बना रही है और भक्त भी बना रही है। भक्तों और प्रजा की निशानी क्या होगी? राज्य के सम्बन्ध में, आने की बात तो सुनाई, परन्तु प्रजा और भक्त इन दोनों में अन्तर क्या होगा? प्रजा केवल ज्ञान और योग की प्राप्ति करने की पुरुषार्थी होगी, वह सम्बन्ध में समीप नहीं होगी, लेकिन दूर के सम्बन्ध में जरुर होगी। वह मर्यादा पूर्वक जीवन बनाने में, यथायोग्य तथा यथा-शक्ति पुरुषार्थी होगी, बाकी और भी जो दूसरे सब्जेक्ट्स (subjects) हैं–धारणा और ईश्वरीय सेवा- उनमें भी यथा-शक्ति सहयोगी होगी, लेकिन सफलतामूर्त नहीं होगी। इसीलिये वह सोलह कला सम्पूर्ण नहीं बन पाती। कोई-न-कोई संस्कार व स्वभाव के वशीभूत होने के कारण, निर्बल आत्मा हाईजम्प (High jump) नहीं दे सकती। इसलिये रॉयल परिवार में व राज्यकुल में आने के बजाय वह रॉयल प्रजा बन जाते हैं। रॉयल कुल नहीं, रॉयल प्रजा बाकि भक्त जो होंगे, वह कभी भी, स्वयं को अधिकारी अनुभव नहीं करेंगे। उनमें अन्त तक, भक्तपने के संस्कार रहेंगे और वे सदा मांगते ही रहेंगे–आर्शीवाद दो, शक्ति दो, कृपा करो, बल दो, या दृष्टि दो आदि। ऐसे माँगने के संस्कार व आधीन होने के संस्कार उनके लास्ट तक दिखाई देंगे। वे सदैव जिज्ञासु रुप में ही रहेंगे। उन्हें बच्चेपन का नशा मालिकपन का नशा, और मास्टर सर्वशक्तिवान् का नशा धारण कराते भी वे धारण नहीं कर सकेंगे। वे थोड़े में ही राज़ी रहने वाले होंगे–यह है भक्तों की निशानी। अभी इससे देखो कि प्रजा और भक्त कितने बने हैं? भक्त कभी भी डायरेक्ट (Direct) बाप के कनेक्शन (Connection) में आने की शक्ति नहीं रखते, वे सदा आत्माओं के सम्बन्ध में ही संतुष्ट रहते हैं। उनके बार-बार यही बोल रहेंगे, आप ही हमारे लिए सब-कुछ हो, आपके पास ऐसे भक्त भी आवेंगे। न चाहते हुए भी हरेक निमित्त बनी हुई आत्माओं की प्रजा और भक्त बनते ही रहते हैं। अब समझा! आपकी

दुनिया व रचना क्या है? आगे चलकर हरेक को यह साक्षात्कार भी होगा कि मैं किस राजधानी में राज्यपद पाने वाली हूँ या पाने वाला हूँ।

अच्छा, यह तो हुई सितारों की दुनिया अर्थात् उनकी रचना। सितारों में, पहले नम्बर सितारे हैं–सफलता के सितारे। सफलता के सितारों की निशानी क्या है कि जिससे कि स्वयं को चैक कर सको कि मैं सफलता का सितारा हूँ या होवनहार सितारा हूँ? लक्की सितारों की निशानी और उम्मीदवाद सितारों की निशानी क्या है? अपने आप को जानते हुए भी, बाप-दादा नॉलेज के दर्पण द्वारा तीन स्टेजिस (stages) का साक्षात्कार कराते है। साक्षात्कार करना तो सब चाहते हो ना? दिव्य-दृष्टि से नहीं, तो नॉलेज के दर्पण द्वारा तो कर सकते हो ना? सफलता के सितारों की निशानी यह है कि उनके हर संकल्प में दृढ़ता होगी की सफलता अनेक बार हुई है और अभी भी हुई पड़ी है। होनी चाहिए, होगी या नहीं होगी यह स्वप्न में भी कभी उनकी स्मृति में नहीं आवेगा। बल्कि उन्हें शत-प्रतिशत निश्चय होगा कि सफलता हमारी हुई ही पड़ी है। उनके हर बोल की यह विशेषता होगी–कि वे हर बात में निश्चय-बुद्धि होंगे और उनके बोल में, ईश्वरीय सन्तान की खुमारी दिखाई देगी अर्थात् उनमें ईश्वरीय नशा दिखाई देगा। उनमें देह-अभिमान का नशा नहीं दिखाई पड़ेगा। उनके बोल द्वारा संशय बुद्धि वाला भी, निश्चय बुद्धि हो आवेगा; क्योंकि उन्हें एक तो ईश्वरीय खुमारी होती है और दूसरा उनका हर बोल शक्तिशाली होता है। उनके बोल साधारण व व्यर्थ नहीं होते और उनका हर कर्म तो श्रेष्ठ होता ही है, लेकिन उनमें विशेषता यह होगी कि उनके हर कर्म द्वारा, अनेक आत्माओं का पथ-प्रदर्शन होगा। जो गायन है कि जैसे कर्म हम करेंगे, हमको देख और सभी करेंगे ऐसे उनके हर कर्म, अनेक आत्माओं को, एक पाठ पढ़ाने के निमित्त बन जावेंगे और उनका हर कर्म शिक्षा-स्वरुप होगा। इसको ही कहा जाता है–समर्थ-कर्म। ऐसे संकल्प, बोल और कर्म वाला ही हर बात में सदा स्वयं से संतुष्ट होगा। सन्तुष्ट होने के कारण ही वह हर्षित भी होगा लेकिन उसे हर्षित बनाना नहीं पड़ेगा बल्कि वह स्वत: ही सदा हर्षित होगा।

ऐसे सफलतामूर्त से अन्य आत्मायें भी सदा संतुष्ट रहेंगी अर्थात् उन सर्व की संतुष्टता की सफलता, प्रत्यक्ष फल के रुप में दिखाई देगी। भविष्य फल नहीं, बल्कि प्रत्यक्ष फल/ ऐसे सदा हर्षित आत्मा को देख कर, अन्य आत्मायें भी, उनके प्रभाव से दु:ख व उलझन की लहर से बदल कर हर्षित हो जावेंगी। अर्थात् ऐसी आत्मा के सम्पर्क में और उसके समीप आने से अन्य आत्माओं पर भी हर्ष का प्रभाव पड़ जावेगा। जैसे सूर्य के समीप व सम्मुख जाने वाले के ऊपर, न चाहते भी किरणें पड़ती रहती हैं। ऐसे ही सफलतामूर्त के हर्ष की किरणें, अन्य आत्माओं पर भी पड़ती हैं अर्थात् जैसे कि बाप के संग का रंग, एक सेकेण्ड में अनुभव करते हो। अर्थात् जब योग-युक्त होते हो तो बाप का संग लगता है तो उसके रंग का अनुभव होता ना? ऐसे ही सफलता के सितारों के संग का रंग, अन्य आत्माओं को भी अनुभव होता है। यह है सफलतामूर्त व सफलता के सितारों की निशानी।

दूसरे हैं लक्की सितारे (lucky stars)। उसकी निशानी क्या होगी? लक्की सितारे विशेष रुप से बाप के स्नेही, बाप के चरित्र, बाप के सर्व-सम्बन्धों के रस में ज्यादा मग्न रहते हैं। उनके संकल्प भी ज्यादा शक्तिशाली नहीं, लेकिन स्नेही होंगे। उनकी स्मृति रुप में भी बाप के मिलन और बाप के चरित्रों का ज्यादा वर्णन रहेगा। उनकी बीज रुप स्टेज कम रहेगी, लेकिन अव्यक्त मिलन, अव्यक्त स्थिति और स्नेह भरी रुह रुहान इसमें वे ज्यादा रहेंगे। ऐसी आत्माओं को स्नेह के कारण और संग तोड़, एक संग सर्व-सम्बन्ध निभाने के कारण ही सहयोग प्राप्त होता है। उन्हें बाप के सहयोग के कारण मेहनत कम करनी पड़ती है और प्राप्ति अधिक होती है। वह सदैव ऐसा अनुभव करते हैं कि मेरा लक्क (Luck) अच्छा है; मुझे बाप की एकस्ट्रा (extra) मदद है और मैं तो पार हो ही जाऊंगी। मेरे जैसा स्नेह किसी का भी नहीं है। सहयोग होने के कारण, उनके बोल फलक के होते हैं। पहले नम्बर वाले में झलक होती है, दूसरे नम्बर वाले में झलक नहीं बल्कि फलक होती है। वह बाप समान होते हैं और यह बाप स्नेही होते हैं। लेकिन सहयोग क्यों और किस आधार पर मिला या वे लक्की भी क्यों बने? इसका मूल आधार, सर्व-सम्बन्ध तोड़ एक संग जोड़ना, इस सम्बन्ध में वे अटूट और अटल हैं। इस कारण उनको लक्की कहा जाता है। सफलतामूर्त के बोल होंगे, यह तो हुआ ही पड़ा है और लक्की सितारों के बोल होंगे, हाँ मैं समझता हूँ यह अवश्य होगा, बाप मददगार बनेगा–यह है दूसरी स्टेज।

तीसरे हैं उम्मीदवार सितारे। ऐसी आत्मायें, सदा सफलता प्राप्त न होने के कारण, उम्मीद रखती हैं, कि करुंगा जरुर, पहुँचूंगा जरुर वा बनूंगा जरुर; लेकिन बीच-बीच में कही रुकते भी है, अटकते भी हैं और कभी-कभी वे दिलशिकस्त भी होते हैं। अनेक प्रकार के, भिन्न-भिन्न विघ्न आने के कारण, कभी वे घबराते हैं और कभी वे महावीर बन जाते हैं। कभी बाप के मिलन का उन्हें नम्बर मिलता है और कभी उन्हें मेहनत के बाद मिलता है। इसलिए उनका तीसरा नम्बर कहलाया जाता है। वह सदा हर्षित नहीं रहेगा और वह सदा संतुष्ट भी नहीं रहेगा। लेकिन, उम्मीन कभी नहीं छोड़ेगा। वह इस निश्चय से भी कभी डगमग नहीं होंगे, कि मैं बाप का हूँ। लेकिन निर्बल होने के कारण, वे कभी-कभी दिलशिकस्त हो जाते हैं। यह हैं उम्मीदवार सितारे, समझा! अब अपने ज्ञान-दर्पण में देखना है कि मैं कौन

हूँ यही पहेली हल करने आये थे ना? और अब अन्त में भी यही पहेली हल करनी है कि मैं कौन हूँ? लक्ष्य सफलता का सितारा बनने का रखना है; क्योंकि बाप-समान बनना है। सिर्फ बाप स्नेही बनने से खुश नहीं रहना है।

बाप-समान बनाने के लिये व सफलतामूर्त बनने के लिये, आज आपको दो बातें सिर्फ दो शब्दों में सुनाते हैं। दो शब्द धारणा तो सहज है ना? सदैव सर्व-आत्माओं के प्रति, सम्पर्क में आते हुए, सम्बन्ध में आते हुए और सेवा में आते हुए अपनी शुद्ध भावना रखो। शुभ भावना और शुद्ध कामना। चाहे आपके सामने कोई भी परीक्षा का रुप आवे और चाहे डगमग करने के निमित्त बन कर आवे लेकिन हरेक आत्मा के प्रति आप शुभ कामना, और शुद्ध भावना यह दो बातें हर संकल्प, बोल और कर्म में लाओ, तो आप सफलता के सितारे बन जायेंगे। यह तो सहज है ना? ब्राह्मणों का यही धर्म और यही कर्म है। जो धर्म होगा वही कर्म होगा। बाप की हर बच्चे के प्रति यही शुभ कामना और शुद्ध भावना है कि वह बाप से भी ऊंच बने। इस कारण जब छोटी-छोटी बातें देखते व सुनते हैं, तो समझते हैं कि अब उसी घड़ी से सब सम्पन्न हो जावें। मास्टर सर्वशक्तिवान् यदि वे दृष्टि व वृत्ति की बात कहें तो क्या शोभता है? अर्थात् सर्वशक्तिवान् बाप के आगे, मास्टर सर्वशक्तिवान् कमजोरी की बातें करते हैं तो इसलिए अब बाप इशारा देते हैं कि अब मास्टर बनो, क्योंकि स्वयं को बनाकर फिर विश्व को भी बनाना है। समझा!

ऐसे समझदार बच्चे, सुनना और करना समान बनाने वाले, हर संकल्प व हर बोल में बाप-दादा को फॉलो करने वाले, सफलता के सितारे लक्की और उम्मीदवार सितारे, लक्ष्य को सम्पूर्ण पाने के अधिकारी बच्चों को बाप-दादा का याद प्यार, गुडनाइट और नमस्ते।''

इस मुरली का सार

१ .जो समीप की आत्माएं होती हैं; जिन आत्माओं का बाप से सम्बन्ध भी जुट जाता है और साथ-साथ वर्से के अधिकारी भी बनते हैं वे रॉयल फेमिली अर्थात् राज परिवार में आते हैं।

२ .प्रजा ज्ञान-योग की पुरुषार्थी होगी, लेकिन वह सम्बन्ध में समीप नहीं होगी। धारणा एवं ईश्वरीय सेवा में यथा-शक्ति सहयोगी होगी, किन्तु सफलतामूर्त नहीं होगी। और वह किसी संस्कार व स्वभाव के वशीभूत होगी।

18.7.74

सम्पूर्ण पवित्र वृत्ति और दृष्टि से श्रेष्ठ तकदीर की तसवीर

श्रेष्ठ तकदीर की तसवीर बनाने वाले, सर्व-आत्माओं के शुभ-चिन्तक व सदा कल्याणकारी परम पिता शिव परमात्मा बोले:–

आज विशेष रुप से, मधुबन निवासियों के तकदीर की लकीर देख रहे हैं। हरेक श्रीमत के अनुसार व बाप-दादा की पालना के अनुसार, अपनी-अपनी तकदीर की लकीर बना रहे हैं। क्या अपनी तसवीर को सदैव उर्पण में देखते रहते हो? क्या इस तकदीर की लकीर की मुख्य विशेषताओं को जानते हो? स्थूल तसवीर व चित्र बनाने वाले जानते हैं कि इस चित्र की वैल्यु (value) किन-किन विशेषताओं के आधार पर होगी। स्थूल चित्र की मुख्य विशेषता, आकर्षण व वैल्यु उसके फेस (face) के आधार पर ही होती है। कोई भी चित्र को देखेंगे, तो सबकी नजर पहले उसके चेहरे अर्थात् फेस (face) पर ही जाती है। हर चित्र के नैन-चैन देखते हुए ही, उन चित्रों की वैल्यु की जाती है। वैसे भी, इस तकदीर के तसवीर की वैल्यु, मुख्य किन बातों पर होती हैं? उसकी मुख्य क्या विशेषतायें हैं। अगर कोई की तकदीर की तसवीर देखेंगे तो क्या विशेषतायें देखेंगे?

एक मुख्य विशेषता यह देखी जाती है कि तकदीर की तसवीर में क्या स्मृति पॉवरफुल (powerful) है अर्थात् सदा स्मृति स्वरुप है? दूसरी बात कि क्या भाई-भाई की वृत्ति सदा कायम रहती है? तीसरी क्या रुहानी अर्थात् सम्पूर्ण पवित्र दृष्टि है? मूल में ये तीन ही बातें हैं-स्मृति, वृत्ति और दृष्टि। इन तीनों विषेषताओं के आधार से ही दिव्य गुणों का श्रृंगार व चमक, झलक और फलक तसवीर में दिखाई देती हैं। अगर यह तीनों ही बातें, युक्ति-युक्त व श्रेष्ठ हैं और यह यथार्थ हैं, तो ऐसी तकदीर की तसवीर ऑटोमेटिकली (automatically; स्वत:) सर्व-आत्माओं को अपनी तरफ आकर्षित करती हैं। जैसे स्थूल नेत्रों के नैन-चैन, रास्ता चलते हुए, आत्मा को भी अपनी तरफ आकर्षित कर देते हैं, ऐसे ही यह तकदीर की तसवीर भी सर्व-आत्माओं को अपनी रुहानी दृष्टि व सदा स्मृति और वृत्ति से अपनी तरफ आकर्षित जरुर करती हैं। जैसे स्थूल चित्र देहधारी बनाने में अर्थात् देहअभिमान में लाने के निमित्त बन जाते हैं, ना चाहते हुए भी आकर्षित करते हैं। कच्चे ब्राह्मणों को व देहीअभिमानी बनने के पुरुषार्थियों को भी आकर्षित कर देह-अभिमानी बना देते हैं। जो ही फिर कम्पलेन्ट (complaint) करते हैं कि रास्ता चलते चैतन्य चित्र व जड़ चित्र देखते हुए, आत्म अभिमानी से देह-अभिमानी बन जाते हैं। ऐसे ही जब रुहानी चित्र व तसवीर आकर्षणमय बनावेंगे तो अनेक आत्मायें चलते-फिरते भी देह अभिमानी से निकल देही-अभिमानी बन जावेंगी। जब स्थूल चित्रों में इतनी आकर्षण है, तो क्या आप रुहानी चैतन्य चित्रों में इतनी रुहानी आकर्षण नहीं है, अब यही चैक (check) करना है कि मेरी तसवीर व चित्र कहाँ तक आकर्षणमूर्त बना है? इस रुहानी चित्र में अगर

इन तीन विशेष बातों में से एक की भी कमी है तो वह वैल्युएबल नहीं गिना जावेगा। जैसे स्थूल चित्रों में भी ऑख्, नाक व कान आदि आदि कोई भी एक चीज यथार्थ नहीं होती है, तो चित्र की वैल्यु कम हो जाती है। चाहे सारा चित्र कितना ही सुन्दर हो, लेकिन मुख्य फेस (face) में, अगर थोडी-सी भी कमी रहती है, तो चित्र बेकार हो जाता है या फिर उसकी वैल्यु आधी हो जाती है। ऐसे ही, यहाँ भी इन तीन विशेषताओं में से एक की भी कमी है तो प्रालब्ध व प्राप्ति के समय में से, आधा समय कम हो जाता है अर्थात् सोलह कला से चौदह कला हो जाने से आधी वैल्यु हो गयी ना? इसलिये इन तीनों ही बातों की, हर समय चैकिंग चाहिए। अच्छा, तो क्या ऐसी चैकिंग करते हो?

क्या चैकिंग का यन्त्र जानते हो? यन्त्र द्वारा ही तो चैकिंग करेंगे ना? वह कौन-सा यन्त्र है कि जिससे अपने को चैक कर सको? यंत्र है-बुद्धि, लेकिन दिव्य-बुद्धि का नेत्र ब्राह्मण बनते ही दे देते हैं। जैसे, ऐसे कई लौकिक कुल होते हैं जहाँ जन्म लेने से ही युद्ध में व हिंसा में प्रवीण बनाने के लिये बचपन से ही तलवार के बजाय चाकू व लाठी चलाना सिखलाते हैं। जिससे कि उनको अपने शूरवीर कुल की स्मृति रहे। बाप-दादा भी हर ब्राह्मण को माया के वार से बचने के लिये व माया को परखने के लिये यह दिव्य-बुद्धि का नेत्र देते हैं। लेकिन दिव्य-बुद्धि के बजाय, जब साधारण लौकिक बुद्धि वाले बन जाते हैं, तब माया को परख नहीं सकते व माया के वार से बच नहीं सकते व अपनी चैकिंग नहीं कर सकते। पहले यह देखो कि क्या अपना दिव्य बुद्धि-रुपी नेत्र अपने पास कायम है? कहीं दिव्य बुद्धि-रुपी नेत्र पर, माया के संगदोष व वातावरण का प्रभावशाली जंग तो नहीं लग रहा है व कोई डिफेक्ट तो नहीं कर रहा है? क

अपनी ऐसी श्रेष्ठ तस्वीर बनाने के लिये मुख्य तीन विशेषताओं को भरने के लिये तीन शब्द याद रखो–(१) निर्वाण स्थिति में होना है (२) निर्मान बनना है और (३) निर्माण करना है। निर्वाण, निर्माण और निर्मान अर्थात् मान से परे-यह तीन शब्द स्मृति में रखो तो तक-दीर की तसवीर आकर्षणमय बन जायेगी। चलते-चलते इन तीन बातों की कमी हो जाती है। निर्वाण स्थिति में कम रहते हैं, वाणी मे सहज और रुचि से आते हैं। जितनी वाणी से लगन है, उतनी वाणी से परे स्थिति में स्थित होने की लगन व रस कम अनुभव करते हो। निर्मान बनने के बजाए अनेक प्रकार के मान-देह का व पोजीशन (position) का, गुणों का, सेवा का, सफलता का व अनेक प्रकार के मान सहज स्वीकार कर लेते हो और वीकार करने की इच्छा में रहते हो। आप मान के जिज्ञासु हो, इसलिये स्वमान का कोस अभी तक समाप्त नहीं कर सके हो? जब यह जिज्ञासु रुप समाप्त होता है, तब ही स्वमान की स्थिति स्वत: और सदा रहती है। मान, स्वमान को भुला देता है। ऐसे ही नव-निर्माण करने के बजाय या कन्स्ट्रक्शन (Construction) के बजाय डिस्ट्रक्शन (destruction) कर देते हो। अर्थात् नव-निर्माण के बजाय कभी-कभी कोई की स्थिति को नीचे गिराने के निमित्त बन जाते हो। सदैव हर कर्म में व हर संकल्प में चैक करो कि यह संकल्प, बोल व कर्म क्या नव-निर्माण के निमित्त है? ऐसी स्टेज रखने से सर्व-विशेषतायें स्वत: ही आ जावेंगी। यह है वर्तमान समय पुरुषार्थ की तीव्र करने की युक्ति।

मधुबन निवासियों की रिजल्ट अच्छी रही। मेजॉरिटी (majority) स्नेह और सहयोग में अथक सेवाधारी रहे हैं और आगे भी बनते रहेंगे। महिमा योग्य तो बने हो, जो कि स्वयं बाप-दादा महिमा कर रहे हैं। अब आगे क्या करना है? मधुबन निवासियों को और सब आत्माओं से विशेष व्रत लेना चाहिए। मधुबन निवासियों को और सब आत्माओं से विशेष व्रत लेना चाहिए। कौन-सा? व्रत यही लेना है कि हम सब एक मत, एक ही श्रेष्ठ वृत्ति, एक ही रुहानी दृष्टि और एक-रस अवस्था में एक-दो के सहयोगी बन, शुभ चिन्तक बन, शुभ भावना और शुभ कामना रखते हुए और अनेक संस्कार होते हुए भी, एक बाप-समान सतोप्रधान संस्कार और स्व के भाव में रहने वाला, स्वभाव बनाने का किला मजबूत बनावेंगे–यह है व्रत। क्या स्वयं के प्रति व सर्व-आत्माओं के प्रति, यह व्रत लेने की हिम्मत है? स्वयं के प्रति तो प्रवृत्ति में रहने वाले और वातावरण में रहने वाले भी करते हैं। मधुबन निवासियों में, न सिर्फ स्वयं के प्रति, साथ ही संगठन के प्रति भी व्रत लेने की हिम्मत चाहिए। यही मधुबन वरदान भूमि की विशेषता है। समझा!

जैसे अभी हिम्मत का प्रत्यक्ष फल दिखाया, ऐसे ही एक-दो का सावधान करते हुए और एक-दो के सहयोगी बनते हुए, इस व्रत को साकार रुप में लाने में सफल हो जावेंगे। जेसे और जोन वालों को, अपनी-अपनी विशेष सर्विस का सबूत देने के लिये सुनाया है वैसे ही मधुबन निवासियों को भी इस बात का सबूत देना है। इस आधार पर ही, जनवरी में प्राइज मिलेगी। इतने समय में, सबूत देना मुश्किल है क्या? साकार रुप द्वारा व अव्यक्त रुप द्वारा शिक्षा और स्नेह की पालना, कितने समय ली है? पालना लेने के बाद, अन्य आत्माओं की पालना करने के निमित्त बन जाते हैं। क्या ऐसी पालना करने के निमित्त बने हो या अभी तक लेने वाले ही हो? अभी तो पुरानों को, आने वाले नये बच्चों की पालना करनी चाहिए अर्थात् अपने शिक्षास्वरुप द्वारा और स्नेह द्वारा उनको आगे बढ़ाने में सहयोगी बनना है और इस कार्य में दिन-रात बिजी रहना चाहिए। यह अव्यक्त पार्ट भी विशेष नयों के लिये है और पुरानों को तो, अब बाप के समान बन, नई आत्माओं के हिम्मत और हुल्लास को बढ़ाना है। जैसे बाप-दादा ने, बच्चों को अपने से भी आगे रखते हुए, अपने से भी ऊंच बनाया,

ऐसे ही पुरानों का कार्य है नयों को अपने से भी आगे बढ़ाने का सबूत दिखाना व सर्व-शिक्षाओं को साकार स्वरुप में दिखाना है। पालना का प्रैक्टिकल रुप रिटर्न रुप में देना है।

अच्छा, ऐसे सपूत बच्चे, अपनी तकदीर की तस्वीर अपनी धारणाओं द्वारा दिखलाने वाले, सदा मूल-मन्त्र और यन्त्र को कर्तव्य में लाने वाले; बाप-दादा के समान हर सेकेण्ड और संकल्प सर्व-आत्माओं के कल्याण के प्रति लगाने वाले; सदा स्व के भाव में रहने वाले, बाप-दादा समान श्रेष्ठ संस्कार अर्थात् अनादि और आदि संस्कारों को प्रत्यक्ष रुप में लाने वाले, हर संकल्प और हर समय को सफल बनाने वाले सफलतामूर्त सितारों को बाप-दादा का याद प्यार, गुडनाइट और नमस्ते।''

महावाक्यों का सार

(१)तकदीर की तस्वीर में एक विशेषता यह देखनी है कि स्मृति कहाँ तक पॉवरफुल है, दूसरे क्या भाई-भाई की वृत्ति सदा कायम रहती है और तीसरे कि क्या रुहानी सम्पूर्ण पवित्र दृष्टि है? इन विशेषताओं के आधार से क्या दिव्य-गुणों का श्रृंगार व चमक, फलक और झलक तस्वीर में दिखाई देती है? क्योंकि ऐसी तकदीर की तस्वीर स्वत: ही सर्व-आत्माओं को अपनी तरफ आकर्षित करती है।

(२)अपनी श्रेष्ठ तस्वीर बनाने के लिये और मुख्य तीन विशेषताओं को भरने के लिये ये तीन शब्द याद रखो। (१) निर्वाण स्थिति में होना है (२) निर्मान अर्थात् मान से परे बनना है और (३) निर्माण करना है।

13.9.74

मुरब्बी बच्चे बन अपनी स्टेज को योग-युक्त व युक्ति-युक्त बनाओ

निर्बल को बलवान बनाने वाले, सर्व-आत्माओं के संस्कार व स्वभाव को श्रेष्ठ बनाने वाले ज्ञान सागर बाबा बोले:–

''आज विशेष रुप से बाप किन लोगों से मिलने के लिये आये हुए हैं? आज का यह संगठन कौन-सा संगठन है? बाप-दादा इस संगठन को देखते और हर्षित होते हुए यही सबको टाइटल देते कि यह बाप-दादा के मुरब्बी बच्चों का संगठन है। मुरब्बी बच्चे जो होते हैं, वह बाप के साथ कदम के साथ कदम उठाते हुए और हर कार्य में सदा सहयोगी स्वत: ही बन जाते हैं, उन्हें बनना नहीं पड़ता और उन्हें बनने के लिये सोचना भी नहीं पड़ता। मुरब्बी बच्चा, स्नेही होने के नाते, सदा सहयोगी होता ही है। मुरब्बी बच्चों को, ड्रामानुसार स्नेह का रिटर्न, वरदान रुप में सहयोगी बनने का, सहज ही प्राप्त होता रहता है। अगर यह वरदान स्वत: ही प्राप्त है, तो समझो कि मैं मुरब्बी बच्चा हूँ। मुरब्बी बच्चे की स्टेज, सदा योग-युक्त और युक्ति-युक्त होती है। मुरब्बी बच्चा अर्थात् बाप के समान सर्वगुणों का स्वरुप जो बाप के गुण हैं, उन गुणों को साकार करने वाला ही मुरब्बी बच्चा कहलाता है। यह ऐसा ही ग्रुप है और यह सर्विस के निमित्त बनी हुई जिम्मेवार आत्मायें हैं।

यह तो सब कहेंगे कि सर्विस-अर्थ निमित्त अर्थात् बाप के गुणों को साकार करने के निमित्त–इसको ही सर्विस कहा जाता है। बाकी ज्ञान को वर्णन करना, यह तो कॉमन (common) बात है। यह विशेष सर्विस नहीं है। सर्विस की विशेषता अर्थात् बाप के सर्वगुणों का स्वरुप बन कर, बाप का साक्षात्कार अपने स्वरुप द्वारा कराना। सुनना-सुनाना, यह तो द्वापर युग से चला आ रहा है। लेकिन आप विशेष आत्माओं की विशेषता किस बात में हैं? बाप-समान बन, सर्व को बाप का साक्षात्कार कराना और साक्षात् बन साक्षात्कार कराना। यह सिर्फ विशेष आत्मायें ही कर सकती हैं, यह और कोई आत्मा नहीं कर सकती। न भक्तिमार्ग वाले और न ज्ञान मार्ग में आने वालों साधारण आत्मायें। मुरब्बी बच्चों का फर्ज भी विशेष यही है।

साधारण आत्माओं और विशेष आत्माओं में मुख्य कौन-सी बात का अन्तर होता है? कोई गुह्य अन्तर सुनाओ। मुख्य अन्तर यह है–विशेष आत्माओं के मुख से और उनके अनुभव से, हर आत्मा का एक सेकेण्ड में और अति सहज ही डायरेक्ट बाप से कनेक्शन जुट जावेगा। और जो साधारण आत्मा होगी, वह बीच में दलाल जो बनते हैं, तो पहले दलाल में रुक कर फिर बाद में बाप से डायरेक्ट जुटेगा। साधारण आत्माओं के सर्विस की रिजल्ट में, आने वाली आत्मा इतनी शक्तिशाली नहीं बनती, जो सहज और बहुत जल्दी बाप से कनेक्शन जोड़ने के निमित्त बनेगी, लेकिन जिनके निमित्त बनती हैं, उनको मुश्किल जरुर अनुभव होगा। मेहनत, मुश्किल और समय लगेगा। क्या करें, कैसे करें, यह हो सकता है अथवा नहीं–उनके सामने यह क्वेश्चन आवेंगे; लेकिन विशेष आत्मा अपनी विशेषता के आधार से, अपनी शक्ति के आधार से यह क्यों और कैसे के क्वेश्चन समाप्त कर देंगी। वे मुश्किल और मेहनत का अनुभव नहीं करने देंगी। आने से ही हरेक यह अनुभव करेंगे कि यह तो मेरा गंवाया हुआ परिवार या भूला हुआ बाप, मुझे फिर से मिल गया है। भूलने पर आश्चर्य लगेगा कि मैं भूला कैसे? ऐसे बाप को, मैं भूल गया! यह है मुख्य अन्तर, विशेष आत्माओं और साधारण आत्माओं का। साधारण आत्मा प्रयत्न करती है कि बाप से डायरेक्ट कनेक्शन जुट जावे। लेकिन आजकल की निर्बल आत्माओं को सिर्फ अपना बल नहीं चाहिए क्योंकि वे सिर्फ ज्ञान और योग के आधार से नहीं चल पाते हैं बल्कि उन्हों को निमित्त बनी हुई आत्माओं की शक्ति का सहयोग

चाहिए, जिससे कि वह जम्प (Jump) दे सकें।

दिन प्रतिदिन आपके पास जो आत्मायें आयेंगी वह अति निर्बल स्टेज वाली ही आवेंगी। जैसे पहले ग्रुप में आप लोग निकले तो पहले ग्रुप की शक्ति, हिम्मत और दूसरे ग्रुप की शक्ति, हिम्मत और तीसरे ग्रुप की शक्ति और हिम्मत में अन्तर दिखाई देता है ना। ऐसे ही फिर नई-नई आत्माएँ जो अब निकल रही है उनकी शक्ति और हिम्मत में भी अन्तर दिखाई देता है। तन से भी और मन से भी हर ग्रुप में अन्तर दिखाई ता जाता है। यह तो सबका अनुभव है ना? हिसाब से सोचो कि अब जो लास्ट की आत्मायें आवेंगी, वह क्या होंगी? अति निर्बल होंगी ना? तो, ऐसी निर्बल आत्माओं को सिर्फ ज्ञान दे दिया, उन्हें कोर्स करा दिया व योग में बैठा दिया, वे इससे आगे नहीं बढ़ेगी। अब तो निमित्त बनी हुई आत्माओं को, अपनी प्राप्त की हुई शक्तियों के आधार से ही निर्बल आत्माओं को सहयोग देते हुए, आगे बढ़ाना पड़ेगा। इसके लिये अभी से ही अपने में सर्वशक्तियों का स्टॉक जमा करो। जैसे स्थूल भोजन का लंगर लगता है ना, ऐसे ही आपके पास शक्ति लेने का दृश्य बहुत जल्दी सामने आवेगा अर्थात् आप लोगों को भी शक्ति देने का लंगर लगाना पड़ेगा। उसके लिये आप को अपने में पहले से ही स्टॉक जमा करना पड़ेगा। जो गायन है-द्रोपदी के देगड़े का। द्रोपदियाँ तो आप सब हो न? द्रोपदी अर्थात् यज्ञमाता का देगड़ा दोनों बातों में प्रसिद्ध है। एक तो स्थूल साधनों की कोई कमी नहीं और दूसरे सर्वशक्तियों की कोई कमी नहीं। सर्व-शक्तियों से सम्पन्न देगड़ा कब खाली नहीं होता। भल कितने भी आ जाएँ। कितना बड़ा लंगर लग जावे कोई भूखा नहीं जा सकता।

आगे चल कर, जब प्रकृति के प्रकोप होंगे और आपदायें आवेंगी, तब सबका पेट भरने के लिये कौन-सी चीज काम आवेगी? उस समय सबके अन्दर कौन-सी भूख होगी? अन्न की कमी या धन की? तब तो, शान्ति और सुख की भूख होगी। क्योंकि प्राकृतिक आपदाओं के कारण, धन होते हुए भी, धन काम में नहीं आवेगा। साधन होते हुए भी साधनों द्वारा प्राप्ति नहीं हो सकेगी। जब सब स्थूल साधनों से व स्थूल धन से प्राप्ति की कोई आशा नहीं रहेगी, तब उस समय सबका संकल्प क्या होगा कि कोई शक्ति देवे, जो कि इन आपदाओं से पार हो सकें और कोई हमें शान्ति देवे। तो ऐसे-ऐसे लंगर बहुत लगने वाले हैं। उस समय पानी की एक बूंद भी कहीं दिखाई नहीं देगी। अनाज भी प्राकृतिक आपदाओं के कारण खाने योग्य नहीं होगा, तो फिर उस समय आप लोग क्या करेंगे? जब ऐसी परीक्षायें आपके सामने आयें तो, उस समय आप क्या करेंगे? क्या ऐसी परीक्षाओं को सहन करने की इतनी हिम्मत है? क्या उस समय योग लगेगा या कि प्यास लगेगी। अगर कूएँ भी सूख जावेंगे, फिर क्या करेंगे? जब यह विशेष आत्माओं का ग्रुप है, तो उनका पुरुषार्थ भी विशेष होना चाहिए ना? क्या इतनी सहनशक्ति है? यह क्यों नहीं समझते–जैसा कि गायन है कि चारों ओर आग लगी हुई थी, लेकिन भट्टी में पड़े हुए पूंगरे, ऐसे ही सेफ (safe) रहे, जो कि उनको सेक तक नहीं आया। आप इस निश्चय से क्यों नहीं कहते? अगर योग-युक्त है, तो भल नजदीक वाले स्थान पर नुकसान भी होगा, पानी आ जावेगा लेकिन बाप द्वारा जो निमित्त बने हुए स्थान हैं, वह सेफ रह जावेंगे, यदि अपनी गफलत नहीं है तो। अगर अभी तक कहीं भी नुकसान हुआ है, तो वह अपनी बुद्धि की जजमेन्ट (Judgement) की कमजोरी के कारण। लेकिन अगर महारथी, विशाल बुद्धि वाले और सर्वशक्तियों के वरदान प्राप्त करने वाले, किसी भी स्थान में रहते हैं, तो वहाँ सूली से काँटा बन जाता है अर्थात् वे सेफ रह जाते हैं। कैसा भी समय हो यदि शक्तियों का स्टॉक जमा होगा, तो शक्तियाँ आपकी प्रकृति को दासी जरुर बनावेंगी अर्थात् साधन स्वत: जरुर प्राप्त होंगे।

शुरु-शुरु में अखबार में निकाला गया था कि ओम मण्डली इज दि रिचेस्ट इन दि वर्ल्ड (Om Mandli is the richest in the world) तो यही बात फिर अन्त में, सबके मुख से निकलेगी। लेकिन यह अटेन्शन जरुर रखना कि अगर किसी भी शक्ति की कमी होगी, तो कहीं-न-कहीं धोखा खाने का भी अनुभव होगा। इसलिये पुरुषार्थ अभी इन महीन बातों पर ही करना चाहिए। किसी को दु:ख तो नहीं दिया, हैन्डलिंग (Handling) करना आया अथवा नहीं। यह तो सब छोटी-छोटी बातें हैं। मुरब्बी बच्चों का पुरुषार्थ अभी तक इन बातों का नहीं होना चाहिए। अभी का पुरुषार्थ सर्व-शक्तियों के स्टॉक के भरने का होना चाहिए। मुरब्बी बच्चों के रोज के चार्ट की चैकिंग, यह नहीं होनी चाहिए कि किसी पर क्रोध तो नहीं किया या कोई असन्तुष्ट तो नहीं हुआ, ऐसी मोटी-मोटी बातें चैक करना–यह तो घुड़सवार व प्यादों का काम है। मुरब्बी बच्चों का पुरुषार्थ अभी तक इन बातों का नहीं होना चाहिए। अभी का पुरुषार्थ सर्व-शक्तियों के भरने का होना चाहिए। कोई भी एक शक्ति का न होना अर्थात् मुरब्बी बच्चों की लिस्ट से निकलना। ऐसे नहीं कि छ: शक्तियाँ तो मेरे में हैं ही और आठ शक्तियों में से दो नहीं हैं, तो फिर ५०% से तो आगे हो गये हैं। इसमें भी खुश नहीं होना है। अष्ट शक्तियाँ तो मुख्य कहा जाता है। लेकिन होनी तो सर्व-शक्तियाँ चाहिए। सिर्फ अष्ट शक्तियाँ तो नहीं हैं ना, हैं तो बहुत। बाकी यह तो सिर्फ सुनाने के लिये सहज हो जाये इसलिये अष्ट शक्तियाँ सुना दी गई हैं। अब कोई एक शक्ति को भी कमी नहीं होनी चाहिए। क्योंकि अब जिस भी शक्ति की कमी होगी, वही परीक्षा के रुप में आवेगी। अर्थात् हरेक के सामने ड्रामानुसार पेपर में वही क्वेश्चन आवेगा।

इसलिये सर्वगुण सम्पन्न, सोलह कला सम्पन्न और मास्टर सर्वशक्तिवान् बनो। अगर एक शक्ति की भी कमी है, तो फिर शक्तियाँ कहेंगे न कि सर्वशक्तियाँ। मुरब्बी बच्चे अर्थात् मास्टर सर्वशक्तिवान्। मुरब्बी बच्चा अर्थात् मर्यादा पुरुषोत्तम। जो है ही मर्यादा पुरुषोत्तम, उसका संकल्प भी मर्यादा के विपरीत नहीं चल सकता। जब आप लोगों की चलन को मर्यादा व ईश्वरीय नियम समझ कर चलते हैं, तो आप लोग भी मर्यादा पुरुषोत्तम हुए ना ?

बाप-दादा ने इस संगठन की रुप-रेखा सुनी भी और देखी भी। बहुत अच्छा देखा और बहुत अच्छा सुना/ हरेक ने अपना घाट तो बहुत अच्छा तैयार किया है। जब जेवर बनते हैं तो पहले सोने का घाट तैयार करते हैं, फिर ही उसमें हीरे जवाहिरात जुड़ते हैं। तो जेवर तो बहुत अच्छे-अच्छे ज्वुलर्स (jewellers) ने तैयार किये, डिजाइन (Design) भी बहुत अच्छे बनाए, लेकिन उनमें जो रत्न जड़ने हैं, वह अभी तक नहीं जड़े। वह जड़ित तब होंगे जब प्लैन (Plan) को प्रैक्टिकल में लावेंगे। जेवर अच्छे तैयार किये हैं अर्थात् प्लैन अच्छे बनाये हैं। अब यह देखना है कि हरेक कितने अमूल्य हीरों से अपने को अर्थात् जेवरों को श्रेष्ठ बनाते हैं। अभी वह रिजल्ट देखेंगे। नॉलेजफुल तो बने हो, लेकिन समय के अनुरुप अब आवश्यकता है, पॉवरफुल बनने की। नॉलेजफुल के तो जेवर तैयार किये हैं और अब पॉवरफुल के नंग तैयार करके लगाने बाकी हैं। घेराव अच्छा डाला है। एक-दो के हाथ में हाथ मिलाया है, तब तो घेराव हुआ है ना ? अभी आगे क्या करना है ? यदि कभी भी हाथ मिलाने वाला हाथ कमजोर हो जाये व थक जाए तो भी उसको कमजोर बनने नहीं देना वा ऐसे थके हुए हाथ को भी अथक बनाना, तब ही सफलता होगी। इस संगठन की सफलता, सिर्फ स्वयं को बनाने में नहीं है अपितु संगठन को मजबूत करना, सर्व-साथियों को उमंग व उत्साह में लाना, यह है इस संगठन की सफलता। जब दूसरे की कमी को, अपनी कमी समझेंगे तब ही संगठन को सफल बना सकेंगे। एक की कमी को, थकावट व कमजोरी को देखते हुए, स्वयं को ऐसे के संग की लहर में नहीं लाना है। फलानी ऐसे करती है तो फिर मैं भी कर लूँ। फलानी ने किया, यदि मैंने भी किया तो क्या हुआ ? यह संकल्प स्वप्न तक भी नहीं आने देना, तब समझो कि सफलता है।

मधुबन निवासी भी लक्की हैं। मधुबन निवासियों की रिजल्ट उमंग, उत्साह और अथकपन में अच्छी है, बाकी आगे के लिये और भी मायाप्रुफ बनो। जैसे वाटरप्रूफ (water proof) होता है ना ? ऐसे ही मधुबन निवासियों को मायाप्रूफ बनना है, समझा।''

ऐसे स्वयं को और सर्व-आत्माओं को शक्तिशाली बनाने वाले, निर्बल को बलवान बनाने वाले, संगठन में दूसरे की कमी को स्वयं की कमी समझकर मिटाने वाले, सर्वशक्तियों के भण्डार मास्टर सर्वशक्तिवान्, सदा स्वयं से और सर्व से संतुष्ट रहने वाली संतुष्ट मणियाँ, बाप-दादा और सर्व के दिल पर विजय प्राप्त करने वाले अर्थात सर्व-आत्माओं के संस्कार और स्वभाव को बाप-समान बनाने वाले, ऐसे विजयी रत्नों को बाप-दादा का याद प्यार, गुड नाइट और नमस्ते !

मुरली का सार

(१)मुरब्बी बच्चे स्नेही होने के नाते बाप के हर कार्य में सहयोगी और बाप के सर्व-गुणों व शक्तियों को साकार करने वाले होते हैं। ऐसे बच्चों की स्टेज सदा योग-युक्त और युक्ति-युक्त होती है।

(२)अब तो निमित्त बनी हुई विशेष आत्माओं को, अपनी प्राप्त की हुई शक्तियों के आधार से, निर्बल आत्माओं को सहयोग देते हुए ही आगे बढ़ना पड़ेगा। इसके लिये अभी से ही अपने में सर्व-शक्तियों का स्टॉक जमा करो।

(३)अगर महारथी, विशाल बुद्धि वाले और सर्व-शक्तियों का वरदान प्राप्त करने वाले, किसी भी स्थान में रहते हैं, तो उनके लिये सूली से काँटा बन जाता है अर्थात् विपत्ति व परीक्षाओं के समय वे सुरक्षित रहते हैं।

(४)जब दूसरे की कमी को अपनी कमी समझेंगे तब ही संगठन को मजबूत व सफल बना सकेंगे।

15.9.74

पुरुषार्थ का अन्तिम लक्ष्य है- अव्यक्त फरिश्ता-पन

विघ्न-विनाशक, ज्ञानसूर्य, पतित पावन बाप-दादा ने संगमयुगी ब्राह्मण बच्चों के प्रति महावाक्य उच्चारे:–

''अभी तुम बच्चों का अन्तिम-स्थिति बनाने का अन्तिम पुरुषार्थ चल रहा है। जो महारथी बच्चे निमित्त बने हुए हैं, उन को अपने पुरुषार्थ की रफ्तार में भी सबके आगे निमित्त बनना है। श्रेष्ठ पुरुषार्थ कौन-सा होता है ? वह किसको देख फॉलो करेंगे ? जैसे कि साकार में पुरुषार्थ कैसे करना है और पुरुषार्थ किसको कहा जाता है ? पहले तो पुरुषार्थ के सिम्बल (symbol) अर्थात् साकार ब्रह्मा बाबा को देखते हुए सब आगे बढ़ते थे लेकिन इस समय साकार में, सिम्बल कौन हैं ?–महारथी। क्या महारथियों का ऐसा पुरुषार्थ चल रहा है कि जिसको देख कर अन्य आत्माओं का भी पुरुषार्थ सैम्पल (sample) हो जाए। अन्तिम पुरुषार्थ कौन-सा है, क्या उसको जानते हो ? जैसे शुरु-शुरु में देह-अभिमान को मिटाने का पुरुषार्थ रखा कि ''मैं चतुर्भुज हूँ। इससे स्त्री-भान, कमजोरी, कायरता आदि सब निकल

गई और आप निर्भय और शक्तिशाली बन गये। तो जैसे आदि में देह-अभिमान मिटाने के लिये, कि मैं चतुर्भुज हूँ, यह प्रैक्टिकल पुरुषार्थ चला ना? चलते-फिरते व बात करते यह नशा रहता था कि मैं नारी नहीं हूँ, मैं चतुर्भुज हूँ तो ये दोनों संस्कार और वह दोनों शक्तियाँ मिल गई जैसे कि ये दोनों कार्य हम कर सकते हैं, तो वैसे ही अन्तिम लक्ष्य कौन-सा स्मृति में रहे, जिससे कि ऑटोमेटिकली वह लक्षण आ जाएँ?

वह अन्तिम लक्ष्य पुरुषार्थ के लिये कौन-सा है? वह है–अव्यक्त फरिश्ता हो रहना। अव्यक्त-रुप क्या है?–फरिश्ता-पन। उसमें भी लाइट-रुप सामने है–अपना लक्ष्य। वह सामने रखने से जैसे लाइट के कार्ब (carb) में यह मेरा आकार है। जैसे वतन में भी अव्यक्त-रुप देखते हो, तो अव्यक्त और व्यक्त में क्या अन्तर देखते हो? व्यक्त, पाँच तत्वों के कार्ब में हैं और अव्यक्त, लाइट के कार्ब में हैं। लाइट का रुप तो है, लेकिन आसपास चारों ओर लाइट ही लाइट है, जैसे कि लाइट के कार्ब में यह आकार दिखाई देता है। जैसे सूर्य देखते हो तो चारों ओर फैली सूर्य की किरणों की लाइट के बीच में, सूर्य का रुप दिखाई देता है। सूर्य की लाइट तो है, लेकिन उसके चारों ओर भी सूर्य की लाइट परछाई के रुप में, फैली हुई दिखाई देती है। और लाइट में विशेष लाइट दिखाई देती है। इसी प्रकार से, मैं आत्मा ज्योति रूप हूँ–यह तो लक्ष्य है ही। लेकिन मैं आकार में भी कार्ब में हूँ। चारों ओर अपना स्वरुप लाइट ही लाइट के बीच में स्मृति में रहे और दिखाई भी दे तो ऐसा अनुभव हो। जैसे कि आइने में देखते हो तो स्पष्ट रुप दिखाई देता है, वैसे ही नॉलेज रुपी दर्पण में, अपना यह रुप स्पष्ट दिखाई दे और अनुभव हो। चलते-फिरते और बात करते, ऐसे महसूस हो कि मैं लाइट-रुप हूँ, मैं फरिश्ता चल रहा हूँ और मैं फरिश्ता बात कर रहा हूँ। तो ही आप लोगों की स्मृति और स्थिति का प्रभाव औरों पर पड़ेगा।

कर्तव्य करते हुए भी कि मैं फरिश्ता निमित्त इस कार्य अर्थख् पृथ्वी पर पाँव रख रहा हूँ, लेकिन मैं हूँ अव्यक्त देश का वासी, अब इस स्मृति को ज्यादा बढ़ाओ। मैं इस कार्य-अर्थ अवतरित हुई हूँ अर्थात् जैसे कि मैं इस कार्य-अर्थ पृथ्वी पर वतन से आई हूँ, कारोबार पूरी हुई, फिर वापस अपने वतन में। जैसे कि बाप आते हैं, तो बाप को स्मृति है ना कि हम वतन से आये हैं, कर्तव्य के निमित्त और फिर हमको वापिस जाना है। ऐसे ही आप सबकी भी यह स्मृति बढ़नी चाहिए कि मैं अवतार हूँ अर्थात् मैं अवतरित हुई हूँ, अभी मैं ब्राह्मण हूँ और फिर मैं देवता बनूंगी–यह भी वास्तव में मोटा रुप है। यह स्टेज भी साकारी है। अभी आप लोगों की स्टेज आकारी चाहिए, क्योंकि आकारी से फिर निराकारी सहज बनेंगे। जैसे बाप भी साकार से आकारी बना, आकारी से फिर निराकारी और फिर साकारी बनेंगे।

अब आप लोगों को भी अव्यक्त वतनवासी स्टेज तक पहुँचना है, तभी तो आप साथ चल सकेंगे। अभी यह साकार से अव्यक्त रुप का पार्ट क्यों हुआ?–सबको अव्यक्त स्थिति में स्थित कराने क्योंकि अब तक उस स्टेज तक नहीं पहुँचे हैं। अभी अन्तिम पुरुषार्थ यह रह गया है। इसी से ही साक्षात्कार होंगे। साकार स्वरुप के नशे की प्वाइन्ट्स तो बहुत हैं कि मैं श्रेष्ठ आत्मा हूँ, मैं ब्राह्मण हूँ और मैं शक्ति हूँ। इस स्मृति से तो आपको नशे और खुशी का अनुभव होगा। लेकिन जब तक इस अव्यक्त स्वरुप में, लाइट के कार्ब में स्वयं को अनुभव न किया है, तब तक औरों को आपका साक्षात्कार नहीं हो सकेगा। क्योंकि जो दैवी स्वरुप का साक्षात्कार भक्तों को होगा, वह लाइट रुप की कार्ब में चलते-फिरते रहने से ही होगा। साक्षात्कार भी लाइट के बिना नहीं होता है। स्वयं जब लाइट-रुप में स्थित होंगे, आपके लाइट रुप के प्रभाव से ही उनको साक्षात्कार होगा। जिसे शास्त्रों में दिखाते हैं कि कंस ने कुमारी को मारा, तो वह उड़ गई, साक्षात्-रुपधारी हो गई और फिर आकाशवाणी की। वैसे ही आप लोगों का साक्षात्कार हो, तो ऐसा अनुभव होगा कि मानो यह देवी द्वारा आकाशवाणी हो रही है। वह सुनने को इच्छुक होंगे कि यह देवी या शक्ति मेरे प्रति क्या आकाशवाणी करती है। आप में अब यह नवीनता दिखाई दे। साधारण बोल नजर न आयें, ऊपर से आकाशवाणी हो रही है, बस ऐसा अनुभव हो। इसलिये कहा कि अब ज्वाला-मुखी बनने का समय है। अब आपका गोपीपन का पार्ट समाप्त हुआ। महारथी जो आगे बढ़ते जा रहे हैं, उनका इस रीति सर्विस करने का पार्ट भी ऑटोमेटिकली बदली होता जाता है। पहले आप लोग भाषण आदि करती थीं और कोर्स कराती थीं। अभी चेयरमैन के रुप में थोड़ा बोलती हो, कोर्स आदि आपके जो साथी हैं, वह कराते हैं। अभी इस समय, कोई को आकर्षण करना, हिम्मत और हुल्लास में लाना, यह सर्विस रह गई है, तो फर्क आ जाता है ना? इससे भी आगे बढ़ कर यह अनुभव होगा जैसे कि आकाशवाणी हो रही है। कहेंगे यह कोई अवतार हैं–और यह कोई साधारण शरीरधारी नहीं हैं। अवतार प्रगट हुए है। जैसे कि साक्षात्कार में अनुभव करते-करते देवी प्रगट हुई है। महावाक्य बोले और प्राय:लोप। अभी की स्टेज व पुरुषार्थ का लक्ष्य यह होना है।

अब स्थूल कारोबार से भी, जैसे कि उपराम होते जावेंगे। इशारे में सुना, डायरेक्शन दिया और फिर अव्यक्त वतन में। जैसे साकार में देखा, अनुभव किया, नीचे आये, डायरेक्शन दिया, सुना और फिर ऊपर। शुरु और अन्त की कारोबार में रात और दिन का अन्तर दिखाई दे। अभी जिम्मेवारियाँ तो ओर भी बढ़ेगी। ऐसे नहीं, कि जिम्मेवारियाँ कम होगी, तब फरिश्ता बनेंगे, नहीं! जिम्मेवारियाँ और सर्विस का विस्तार तो चारों ओर और बढ़ेगा। जैसे अब विदेश की भी सर्विस बढ़ी ना और विस्तार भी हुआ ना? ऐसे ही भिन्न-भिन्न

प्रकार की जो सर्विस हो रही है, वह बढ़ेगी जरुर। विश्व की हर प्रकार की आत्माओं का उद्धार होने का गायन भी शास्त्रों में है ना? प्रैक्टिकल में हुआ ना, तब तो इसका शास्त्रों में गायन है? यह सब होगा। अब तो एक-एक स्थान पर बैठे हो, फिर दस-दस स्थान, सम्भालने पड़ेंगे फिर तो एक जगह बैठ भी नहीं सकेंगे। अभी तो छ:आठ मास एक ही जगह बैठते हो, लेकिन फिर तो लाइट हाउस मिसिल चारों ओर सर्विस करते रहेंगे।

जो निमित्त बने हुए मुख्य हैं, सर्विसएबल हैं और राज्यभागय की गद्दी लेने वाले हैं, ऐसे अनन्य रत्न लाइट हाउस मिसल घूमते और चारों ओर लाइट देते रहेंगे। लाइट हाउस का भी प्रैक्टिकल रुप चाहिए ना? एक अनेकों को लाइट देंगे। बेहद विश्व के मालिक, फिर वह कोई एक एरिया के हद का ही जिम्मेवार हो, ऐसा तो हो नहीं सकता। चाहे निमित्त-मात्र भले ही उनका एक ठिकाना हो, जैसे लाइट हाउस का निमित्त ठिकाना तो एक है ना? लेकिन सर्विस एक ठिकाने की नहीं करते बल्कि चारों ओर लाइट फैलाते हैं। इसी रीति स्थान भले एक ही होगा, लेकिन जो अपने में विशेषतायें होंगी या शक्तियाँ हैं, उसका लाभ चारों ओर हो। अभी तक सिर्फ एक स्थान पर ही आपकी विशेषता का लाभ है। सूर्य एक स्थान को ही रोशनी देता है क्या? तो आपकी भी विशेष शक्ति रुपी किरणें चारों ओर फैलनी चाहिए ना? नहीं तो मास्टर सर्वशक्तिवान् और ज्ञान सितारे आप कैसे सिद्ध होंगे? मास्टर ज्ञानसूर्य अर्थात् बाप-समान। सितारे होते हुए भी बाप-समान स्टेज। वह तो अष्ट रत्न ही प्राप्त करेंगे ना? अगर कोई सितारा एक ही स्थान पर, अपना प्रकाश फैलाता है और वह टिमटिमाता उसी अपनी एरिया में ही रोशनी देता है तो उसको मास्टर ज्ञानसूर्य व बाप-समान नहीं कहेंगे। जब तक वह बाप-समान की स्टेज पर नहीं आया है, तब तक बाप-समान तख्त नहीं ले सकता। इसलिये अपनी स्टेज ऐसी बनाओ जो सर्विस बढ़े।

चक्रधारी बनने से ही चक्रवर्ती महाराजा बनेंगे। यहाँ चक्रधारी, वहाँ चक्रवर्ती। जिसमें लाइट का भी चक्र हो और सेवा में प्रकाश फैलाने वाला चक्र भी हो, तब ही कहेंगे–चक्रधारी। ऐसा चक्रधारी ही चक्रवर्ती बन सकता है। चलते-फिरते लाइट का चक्र हरेक को दिखाई देगा, जैसे इन ऑखों से दिखाई पड़ रहा है। आश्चर्य खावेंगे कि यह सचमुच है व मैं ही देख रहा हूँ? आपके लाइट का रुप और लाइट का क्राउन (crown) ऐसा कॉमन हो जावेगा कि चलते-फिरते सबको दिखाई देगा। यह लाइट के ताजधारी हैं। जैसे साकार में लाइट का अनुभव करना कॉमन बात थी और ख्वाहइश करनी नहीं पड़ती थी। सबको उसी रुप से नजर आता था, जैसे कि इन ऑखों से देख रहे हैं। ऐसे आप लोगों को अनुभव होगा। देखते-देखते वह खुद गुम होने लगेंगे–मैं कहाँ हूँ और क्या देख रहा हूँ? जैसे साकार द्वारा अनुभव करते थे कि स्वयं से ही कभी-कभी आश्चर्य खाते थे; कि क्या मेरे पाँव यहाँ है, अथवा मूल वतन या सूक्ष्म वतन में हैं? जैसे साकार द्वारा आपको अनुभव होते थे, वैसे ही फिर आपके द्वारा सबको अनुभव होगा। तब तो समान की स्टेज में आवेंगे। वह तब होंगे, जब बीच-बीच में अपने इस स्वरुप की स्मृति लाते रहेंगे। साकार ने भी गुप्त-पुरुषार्थ किया। इसी प्रकार आप लोगों को भी यह गुप्त पुरुषार्थ व गुप्त मेहनत करनी है। इतना अटेन्शन (attention) है? टेन्शन (tension) होते हुए भी अटेन्शन रहे।

अभी तो फिर भी रात और दिन में आराम करने का टाइम मिलता है, लेकिन फिर तो यह रेस्ट (rest) लेना, यह भी समाप्त हो जावेगा। लेकिन जितना अव्यक्त लाइट रुप में स्थित होंगे, उतना ही शरीर से परे का अभ्यास होने के कारण यदि दो-चार मिनट भी जैसे कि अशरीरी बन जावेंगे, तो मानों जैसे कि चार घण्टे का आराम कर लिया। ऐसा समय आवेगा जो कि नींद के बजाए चार-पाँच मिनट अशरीरी बन जावेंगे, जैसे कि नींद से शरीर को खुराक मिल जाती है, वैसे ही यह भी खुराक मिल जावेगी। शरीर तो पुराने ही रहेंगे। हिसाब-किताब पुराना तो होगा ही। सिर्फ उसमें यह एडीशन (addition; बढ़ोतरी) होगी। लाइट-स्वरुप के स्मृति को मजबूत करने से हिसाब-किताब चुक्त करने में भी लाइट रुप हो जावेंगे। जैसे इन्जेक्शन लगाने से पाँच मिनट में ही फर्क पड़ जाता है, वैसे ही नींद की गोली लेने से भी परेशानी समाप्त हो जाती है। आप भी ऐसे ही समझो कि यह हम नींद की खुराक लेते हैं। ऐसी स्टेज लाने के लिये ही यह अभ्यास है।

अमृत वेले भी जैसे यह अभ्यास करना है–हम जैसे कि अवतरित हुए हैं। कभी ऐसे समझो कि मैं अशरीरी और परमधाम का निवासी हूँ अथवा अव्यक्त रुप में अवतरित हुई हूँ और फिर स्वयं को कभी निराकार समझो। यह तीन स्टेजिस पर जाने की ऐसी प्रैक्टिस हो जाए जैसे कि एक कमरे से दूसरे कमरे में जाना होता है। तो अमृत वेले यह विशेष अशरीरी-भव का वरदान लेना चाहिए अभी विशेष यह अनुभव हो। अच्छा! चढ़ती कला सर्व का भला। चढ़ती कला का, प्रैक्टिकल स्वरुप क्या होता है? उसमें सर्व का भला होता है। इनसे ही चढ़ती कला का अपना पुरुषार्थ देख सकेंगे। सर्व का भला ही सिद्ध करता है कि चढ़ती कला है। वास्तव में यही थर्मामीटर है।

आप लोगों का शुरु में था–शीतला देवी का पार्ट। अभी है–ज्वाला देवी का पार्ट। पहले स्नेह से, समीप सम्बन्ध में आये और अब फिर, शक्ति स्वरुप बनना है। अभी सिर्फ गुण और स्नेह का प्रभाव है या नॉलेज का प्रभाव है, लेकिन साक्षात्मूर्त अनुभव करे कि यह कोई साधारण शक्ति नहीं है। जैसे सूर्य की किरणें फैलती हैं, वैसे ही मास्टर सर्वशक्तिवान् की स्टेज पर शक्तियों व विशेषताओं रुपी किरणें

चारों ओर फैलती अनुभव करें। मैं विघ्न-विनाशक हूँ, इस स्मृति की सीट पर स्थित होकर कारोबार चलायेंगे तो विघ्न सामने तक भी नहीं आवेंगे। अच्छा!''

महावाक्यों का सार

(१)जिस प्रकार प्रारम्भ में देह अभिमान को मिटाने के लिये यह अभ्यास किया कि मैं चतुर्भुज हूँ, वैसे ही पुरुषार्थ का अन्तिम लक्ष्य है–अव्यक्त फरिश्ता हो रहना।

(२)कर्तव्य करते हुए भी, इस स्मृति को ज्यादा बढ़ाओ कि मैं फरिश्ता निमित्त इस कार्य-अर्थ पृथ्वी पर पाँव रख रहा हूँ लेकिन मैं हूँ अव्यक्त देश का। मैं इस कार्य-अर्थ अवतरित हुआ हूँ।

(३)जो दैवी स्वरुप का साक्षात्कार भक्तों को होगा वह लाइट रुप की कार्ब में चलते-फिरते रहने से होगा।

(४)आप लोगों को अव्यक्त वतनवासी स्टेज तक पहुँचना है, तब तो साथ चल सकेंगे।

(५)जो निमित्त बने हुए मुख्य हैं, सर्विसएबल हैं, राज्यभाग्य की गद्दी लेने वाले हैं, ऐसे अनन्य रत्न लाइट हाउस मिसिल घूमते हुए चारों ओर लाइट देते रहेंगे।

(६)पवित्रता की लाइट का भी चक्र हो और सेवा का प्रकाश फैलाने वाला भी चक्र हो तब कहेंगे–चक्रधारी। ऐसा चक्रधारी ही चक्र-वर्ती बन सकता है।

5.12.74

व्यर्थ संकल्पों को समर्थ बनाने से काल पर विजय

काल पर विजय दिलाने वाले, सर्व प्राप्तियों के अधिकारी बनाने वाले बाप-दादा बोले:–

''अव्यक्त-मिलन किसको कहा जाता है? जिससे मिलना होता है, उसी के समान बनना होता है। तो अव्यक्त-मिलन अर्थात् बाप-समान अव्यक्त रुपधारी बनना। अव्यक्त अर्थात् जहाँ व्यक्त भाव नहीं। क्या ऐसे बने हो? व्यक्त देश का, व्यक्त देह का और व्यक्त वस्तुओं का जरा भी आकर्षण अपनी तरफ आकर्षित न करे, क्या ऐसी स्थिति बनाई है? जो पहला-पहला वायदा है कि तुम्हीं से सुनूं और तुम्हीं से बोलूं, यह वायदा निभाने के लिये सारा दिन-रात जब तक अव्यक्त व निराकारी स्थिति में स्थित नहीं होंगे, तो क्या बाप-दादा के साथ-साथ रहने का अनुभव कर सकेंगे अर्थात् वायदा निभा सकेंगे? सारे दिन में आप कितना समय, यह वायदा निभाते हो? जिससे मिलना होता है, उसके स्थान पर और वैसी स्थिति, स्वयं की बनानी होती है। वह स्थान और स्थिति ये दोनों ही बदलनी पड़ेगी, तब ही यह वायदा निभा सकते हो। व्यक्त भाव में आना व कोई भी व्यक्त व वस्तु में भावना रहना कि यह प्रिय है व अच्छी है, यह व्यक्त-वस्तु और व्यक्ति में भावना रहना अर्थात् कामना का रुप हो जाता है। जब तक कामना है, तब तक माया से सम्पूर्ण रीति सामना नहीं कर सकते। जब तक सामना नहीं कर सकते, तब तक समान नहीं बन सकते अर्थात् वायदा नहीं निभा सकते।

जैसे आप लोग चित्र में कृष्ण को सृष्टि के ग्लोब पर दिखाते हो–ऐसा ही चित्र अपनी प्रैक्टिकल स्थिति का बनाओ। इस व्यक्त देश व इस पुरानी दुनिया से उपराम। व्यक्त भाव और व्यक्त वस्तुओं आदि सबसे उपराम अर्थात् इनके ऊपर साक्षी होकर खड़े रहें। जैसे पाँव के नीचे ग्लोब दिखाते हैं व ग्लोब के ऊपर बैठा हुआ दिखाते हैं अर्थात् उनका मालिकपन व अधिकारीपन दिखाते हैं तो ऐसे अपना चित्र बनाओ। इस पुरानी दुनिया में, जैसे अपनी स्व-इच्छा से, अपने रचे हुए संकल्प के आधार से अव्यक्त से व्यक्त में आते, व्यक्ति व वस्तुओं के आकर्षण के अधीन होकर नहीं। जैसे लिफ्ट में चढ़ते हो, तो स्विच (Switch) से बाहर हो जाता है तब क्या रिजल्ट (Result) होती है? बीच में लटक जावेंगे ना? ऐसे ही यह स्मृति का स्विच अपने कन्ट्रोल में रखो। जहाँ चाहो, जब चाहो और जितना समय चाहो वैसे अपने स्थान को व स्थिति को सैट कर सको क्या ऐसे अधिकारी बने हो? क्या काल पर विजय प्राप्त की है? काल अर्थात् समय। तो काल पर विजयी बने हो? अगर पाण्डव सेना की व शक्ति सेना की यह स्टेज अन्त में आवेगी तो साइलेन्स पॉवर (Silence Power) तो साइन्स से कम हो गई। क्योंकि साइंस ने तो अभी भी इन तत्वों पर विजय प्राप्त कर ली है।

प्रदर्शनी में, आप लोग चित्र दिखाते हो ना, कि रावण ने चार तत्वों पर विजय प्राप्त की है, उसमें काल भी दिखते हो न? जब रावण ने अर्थात् रावण की शक्ति साइंस ने अभी भी काफी हद तक तत्वों पर विजय प्राप्त कर ली है, तो साइंस आपसे पॉवरफुल (powerful) हुई ना? जब साइन्स की शक्ति अपना प्रत्यक्ष सबूत दे रही है तो साइलेन्स (silence) की शक्ति अपना प्रत्यक्ष सबूत क्या अन्त में देंगी? समय पर विजय अर्थात् काल पर विजय। इसकी परसेन्टेज (percentage) अभी कम है। अपने को निराकारी स्थिति व अव्यक्त स्थिति में स्थित तो करते हो, लेकिन जितना समय स्थित रहना चाहते हो, उतना समय उस स्थिति में स्थित नहीं हो पाते हो। स्टेज के अनुभव भी प्राप्त करते हो, मेहनत भी करते हो, लेकिन काल पर विजय नहीं कर पाते हो। इसका कारण क्या

है? सोचते हो कि आधा घण्टा पॉवरफुल याद में बैठेंगे और आधा घण्टा बैठते भी हो और प्लैन भी बनाते हो लेकिन जितना-जितना जिस स्टेज के लिए सोचते हो, उतना ही समय उस समय उस स्टेज पर स्थित नहीं होते हो। सोचते हो स्विच ऑन (Switch on) थर्ड (third) फ्लोर पर करें, लेकिन पहुँच जाते हो सेकेण्ड फ्लोर पर। वा फर्स्ट या ग्राउण्ट फ्लोर तक पहुँच जाते हो। क्योंकि काल पर विजय नहीं। इसका कारण यह है कि बार-बार सारे दिन में समय गँवाने के अभ्यासी हो। व्यर्थ के ऊपर अटेन्शन देने से ही काल पर विजय प्राप्त करने में समर्थ बनेंगे। जब तक समय व्यर्थ जाता है, तब तक विजय पाने में समर्थ नहीं बन सकते। इसी कारण, जो मिलन का अनुभव करना चाहते हो व निरन्तर वायदा निभाना चाहते हो वह निभा नहीं सकते। तो अब, अपनी तकदीर की तस्वीर सर्व-तत्वों पर और काल पर सदा विजयी की बनाओ। जब एक-एक सेकेण्ड, व्यर्थ से समर्थ में चेन्ज (change) करो, तब ही विजयी बनेंगे, अच्छा।''

ऐसे सदा विजयी, सदा अधिकारी, निरन्तर वायदा निभाने वाले, हरेक को व्यर्थ से समर्थ में परिवर्तन करने वाले, सदा व्यक्त भाव से परे, अव्यक्त स्थिति में रहने वाले लक्की सितारों व समीप सितारों को बाप-दादा का याद प्यार और नमस्ते।

महावाक्यों का सार

(१)जब तक कोई कामना है, तब तक माया से सम्पूर्ण रीति सामना नहीं कर सकते हैं।

(२)जहाँ चाहो, जब चाहो, जितना समय चाहो वैसे अपने स्थान को, स्थिति को सेट कर सको, ऐसे अधिकारी बने हो? काल अर्थात् समय पर विजय प्राप्त की है?

(३)व्यर्थ संकल्पों के ऊपर अटेन्शन देने से ही काल पर विजय प्राप्त करने में समर्थ बन सकेंगे।

24.12.74

एक बार सहयोग देना अर्थात् अन्त तक सहयोग लेना

सहयोगी बच्चों के सदा व अन्त तक सहयोगी बनने वाले, रहमदिल शिव बाबा ने ये मधुर महावाक्य उच्चारे:–

''बाप-दादा सदैव विदेशियों को नम्बर वन याद करता है। जैसे बांधेलियाँ पहले याद आती हैं, वैसे विदेश में रहने वाले बच्चे भी याद आते हैं। उनको भी बार-बार इस देश में न आ सकने का बन्धन है ना? बाप-दादा तो सबसे समीप देखते हैं। जो फॉरेन (foreign) में सर्विस पर गये हैं, वह कोई दूर हैं क्या? वे ऑखों के सामने भी नहीं हैं, लेकिन आंखों में जो समाया हुआ होता है, वह कभी दूर नहीं होता। वह तो सबसे समीप हुआ ना? आप ऑखों के सामने रहती हो या ऑखों में समाई हुई हो? जो समाये हुए हैं, वह हैं निरन्तर योगी। विदेश में रहने वाले बच्चे फिर भी नजदीक आ जाते हैं, और जो नजदीक हैं,देश के हिसाब से रहने वाले चार वर्ष में एक बार भी नहीं आते तो नजदीक कौन हुए? यह सारा सूक्ष्म कनेक्शन (connection) है। नजदीक सम्बन्ध है, तब तो नजदीक आई हो। यह तो (proof) है ना? ड्रामानुसार देखो, इतने महारथियों के संकल्प साकार न हो सके। लेकिन एक बाप का ही संकल्प साकार हो गया, फिर तो समीप हुई ना? अपने को बाप-दादा से दूर मत समझो।

अपनी जन्मपत्री को देखना चाहिए कि आदि से लेकर अर्थात् जन्मते ही मेरी तकदीर की लकीर कैसी है? जिनको जन्म होने से ही तक-दीर प्राप्त है; तकदीर बनाके आए हैं आदि समय की, उसी आधार पर पीछे भी उनको लिफ्ट मिलती है। शुरु से ही सहज प्राप्ति हुई है ना? मेहनत कम और प्राप्ति ज्यादा। यह लॉटरी मिली हुई है। एक रुपये की लाटरी में, लाखों मिल जायें तो मेहनत कम, प्राप्ति ज्यादा हुई ना? कोई भी बात में, अगर एक बार समय पर, बिना कोई संकल्प के, आज्ञा समझ कर जो सहयोगी बन जाते हैं, ऐसे समय के सहयोगियों को बाप-दादा भी अन्त तक सहयोग देने के लिए बाँधा हुआ है। एक बार का सहयोग देने का (Jump) अन्त तक सहयोग लेने का अधिकारी बनाता है। एक का सौ गुना मिलने से मेहनत कम, प्राप्ति ज्यादा होती है। चाहे मन से, चाहे तन से अथवा धन से। लेकिन समय पर सहयोग दिया, तो बाप-दादा अन्त तक सहयोग देने के लिये बांधा हुआ है। जिसको दूसरे शब्दों में भक्त लोग अन्ध-श्रद्धा कहते हैं। ऐसा अगर कोई एक बार भी जीवन में बाप-दादा के कार्य में सहयोग दिया है, तो अन्त तक बाप-दादा सहयोगी रहेगा। यह भी एक हिसाब-किताब है। समझा। अच्छा।''

महावाक्यों का सार

(१)अगर एक बार समय पर बिना कोई संकल्प के आज्ञा समझ कर जो सहयोगी बन जाते हैं ऐसे समय के सहयोगियों को बाप-दादा भी अन्त तक सहयोग देने के लिये बांधा हुआ है?

(२)जो बच्चे फॉरेन में सर्विस पर गए हुए हैं वे बाप-दादा की ऑखों मे समाये हुए हैं।

(३)जो आंखों में समाये हुए हैं वह हैं-निरन्तर योगी।

27.12.74

योगी भव और पवित्र भव द्वारा वरदानों की प्राप्ति

सर्व वरदानों को देने वाले वरदाता शिव बाबा बोले:–

''आज की सभा वरदाता द्वारा, सर्व वरदान प्राप्त की हुई आत्माओं की है। वरदाता द्वारा, सर्व वरदानों में, मुख्य दो वरदान हैं, जिसमें कि सर्व वरदान समाये हुए हैं। वह दो वरदान कौन-से हैं? उसको अच्छी तरह जानते हो या स्वयं वरदान-स्वरुप व वरदानी-मूर्त बन गये हो? जो वरदानी-मूर्त हैं; वह स्वयं स्वरुप बन, औरों को देने वाला दाता बन सकता है। तो अपने से पूछो कि क्या मुख्य दो वरदान-स्वरुप बने हैं? अर्थात् योगी भव और पवित्र भव–इस विशेष कोर्स के स्वरुप बने हो? इसी कोर्स को समाप्त किया है या अभी तक कर रहे हो? सप्ताह कोर्स का रहस्य, इन दो वरदानों में समाया हुआ है। जो भी यहाँ बैठे हैं, क्या उन सबने यह कोर्स, समाप्त कर लिया है या उनका अभी तक यह कोर्स चल रहा है? कोर्स (course) अर्थात् फोर्स (force) भर जाना। सदा योगी-भव और सदा पवित्र-भव का फोर्स अर्थात् शक्ति-स्वरुप का अनुभव नहीं होता, तो उसको शक्ति-स्वरुप नहीं कहेंगे। लेकिन उसे शक्ति-स्वरुप बनने का अभ्यासी ही कहेंगे। क्योंकि स्वयं का स्वरुप, सदा और स्वत: ही स्मृति में रहता है। जैसे अपना साकार स्वरुप, सदा और स्वत: याद रहता है और उसका अभ्यास नहीं करते हो बल्कि और ही, उसको भुलाने का अभ्यास करते हो। ऐसे ही अपना निजी-स्वरूप व वर-दानी-स्वरुप, सदा ही स्मृति में रहना चाहिए। अपवित्रता का और विस्मृति का नामोनिशान न रहे। इसको कहा जाता है–वरदानों का कोर्स करना। क्या ऐसा कोर्स किया है?

जेसे आप लोग, सप्ताह कोर्स समाप्त करने से पहले, किसी भी आत्मा को क्लास में नहीं आने देते हो, ऐसे ही ब्राह्मण बच्चे, जो यह प्रैक्टिकल कोर्स समाप्त नहीं करते तो बाप-दादा व ड्रामा भी उनको कौन-सी क्लास में आने नहीं देते। अर्थात् फर्स्ट क्लास में आने नहीं देते। फर्स्ट क्लास कौन-सी है?–वे सतयुग के आदि में नहीं आ सकते। जब आप लोग, उन को क्लास में आने नहीं देते, तो ड्रामा भी फर्स्ट क्लास में का अधिकारी नहीं बना सकता। फर्स्ट क्लास में, आने के लिए यह मुख्य दो वरदान प्रैक्टिकल रुप में चाहिए। विस्मृति या अपवित्रता क्या होती है इसकी अविद्या हो जाए। तुम संगम पर उपस्थित हो ना? तो ऐसा अनुभव हो कि यह संस्कार व स्वरुप मेरा नहीं है, लेकिन मेरे पास्ट (past) जन्म का था और अब है नहीं। मैं तो ब्राह्मण हूँ और यह तो शूद्रों के संस्कार व उनका स्वरूप है। ऐसे अपने से भिन्न अर्थात् दूसरों के संस्कार हैं, ऐसा अनुभव होना–इसको कहा जाता है न्यारा और प्यारा। जैसे देह और देही अलग-अलग वस्तुयें हैं, लेकिन अज्ञानवश इन दोनों को मिला दिया है। वैसे ही मेरे को मैं समझ लिया है। तो इस गल्ती के कारण कितनी परेशानी व दु:ख व अशान्ति प्राप्त की। ऐसे ही, यह अपवित्रता और विस्मृति के संस्कार, जो मेरे अर्थात् ब्राह्मणपन के नहीं, लेकिन जो शूद्रपन के हैं, उनको मेरा समझने से, माया के वश व परेशान हो जाते हो अर्थात् ब्राह्मणपन की शान से परे (दूर) हो जाते हो। यह छोटी-सी भूल, चैक करो कि कहीं यह मेरे संस्कार तो नहीं था, यह कहीं यह मेरा स्वरुप तो नहीं? समझा? तो पहला पाठ, पवित्र-भव व योगी-भव को प्रैक्टिकल स्वरुप में लाओ, तब ही बाप-समान और बाप के समीप आने के अधिकारी बन सकते हो।

आज कल्प पहले वाले, बहुत काल से बिछुड़े हुए, बाप की याद में तड़पने वाले व अव्यक्त मिलन मनाने के शुद्ध संकल्प में रमण करने वाले, अपने स्नेह की डोर से बाप-दादा को भी बांधने वाले और अव्यक्त को भी आप-समान व्यक्त में बनाने वाले, वह नये-नये बच्चे व साकारी देश में दूर-देशी बच्चे जो हैं, उनके प्रति विशेष मिलन के लिए बाप-दादा को आना पड़ा है। तो शक्तिशाली कौन हुए? बाँधने वाले या बँधने वाले? बाप कहते हैं–वाह बच्चे। शाबास बच्चे। नयों के प्रति विशेष बाप-दादा का स्नेह है। ऐसा क्यों? निश्चय की सदा विजय है। विशेष स्नेह का मुख्य कारण, नये बच्चे सदा अव्यक्त मिलन मनाने की मेहनत में रहते हैं। अव्यक्त रुप द्वारा, व्यक्त रुप से किये हुए चरित्रों का अनुभव करने के सदा शुभ आशा के दीपक जगाए हुए होते हैं। ऐसी मेहनत करने वालों को, फल देने के लिए बाप-दादा को भी विशेष याद स्वत: ही आती है। इसलिए आज की याद, आज की गुडमार्निंग व नमस्ते विशेष चारों ओर के नये-नये बच्चों को पहले बाप-दादा दे रहे हैं। साथ में, सब बच्चे तो है हीं। अब व्यक्त द्वारा अव्यक्त मिलन, सदा काल तो हो नहीं सकता। इस-लिए आने के बाद, जाना होता है। अव्यक्त रुप में अव्यक्त मुलाकात तो सदाकाल की है। ऐसे वरदानी बच्चों को याद-प्यार और नमस्ते।''

महावाक्यों का सार

जैसे अपना साकार स्वरुप सदा और स्वत: ही याद रहता है ऐसे ही अपना निजी व वरदानी स्वरुप सदा स्मृति में रहना चाहिए।

ओम् शान्ति।